झंकार भी
टंकार भी

झंकार भी
टंकार भी

दलबीर 'फूल' लिसान

शब्दांकुर प्रकाशन
SHABDANKUR PRAKASHAN

झंकार भी टंकार भी

ISBN : 978-93-85776-81-6

रचनाकार
दलबीर 'फूल' लिसान

संस्करणः प्रथम, 2020
मूल्यः ₹ 200/-

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

टाइपसेटिंग व आवरण
कंचन चौहान

मुद्रक
आर्यन डिजिटल प्रेस, दिल्ली

प्रकाशक
शब्दांकुर प्रकाशन
J-2nd-41, मदनगीर, नई दिल्ली 110062
दूरभाष : 09811863500
Email: shabdankurprakashan@gmail.com

समर्पण

दादा, दादी, माता-पिता, गुरूजन
एवं
चिरम थलिया परिवार सहित
बाबा ईश्वरपुरी महाराज को
सादर समर्पित

शब्दां का खिलाड़ी

यूं तो म्हारा देश वीरों की भूमि सै पर इन वीरों की गाथाओं के ग्रंथों व गीतों के रचने वाले रचनाकार, गीतकार, कवि लेखकों आदि की भी कोई कमी ना सै। इस धरती के कई विद्वान, रिषि, कलाकार आदि अमर ग्रंथो की रचना करके अमर हो गये। विद्वानों की लेखनी की करामातके कारण ही भारत विश्व में सर्वोपरी है। इब तो विदेशी भी म्हारी भाषा नै पूरा मान-सम्मान दें सै। भाषा को सशक्त, समृद्ध संप्रेषण बनाने में साहित्यकारों, कवियों, लेखकों का बड़ा योगदान है। इन्ही साहित्यकारों में एक नाम उभरता सितारा, लोक कवि, गीतकार, संगीतकार, कहानीकार, रेडियो व टी.वी. गायक श्री दलबीर 'फूल' का सै। इनकी दो पुस्तकें श्री नारायणी जी हरियाणवी बारमासी कुण्डलियां और 'आथूणा की हवा चालग्यी' पहल्याँ प्रकाशित हो चुकी सै और इब अगली कृति 'झंकार भी टंकार भी' ले आया। योमाणस कई रंगा में रंगा सै। शब्दां का खिलाड़ी सै अर हार नै जीत म्हं बदलणियाँ सै कवि की कृति 'झंकार भी टंकार भी' हिन्दी व हरियाणवी भाषा के संप्रेषण का स्टीक उदाहरण सुस्पष्ट करती है।

इस पुस्तक में देशभक्ति राष्ट्रप्रेम, मानवता, सदाचार, संकल्प, सयमं, सदव्यवहार, समाज सुधार, प्रकृतिवर्ण आदि भावों, विचारों का वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से किया सै। काव्य शास्त्र की विभिन्न विधाओं, छन्द, अलकांर, रस, गुण यति, गति आदि का स्पष्ट उदाहरण हास्य व्यंग, करूण रस, वीर रस, दोहों, मुक्तकों, कुण्डलियाँ, कवित्त, चौक्के व छक्कों आदि में प्रस्तुत किया गया सै। अमात्रिक छंद, तालव छंद, अधर छंद तथा अन्य छंदों का प्रयोग इनकी कविताओं में प्रकट हुआ है। कवि के पास समुचित शब्द ज्ञान और भाषायी पकड़ इतनी मजबूत है कि श्रोता या पाठक इनकी विद्वत्ता के समक्ष नतमस्तक होता है, भाव विभोर हो झूम उठता है।

कहीं हास्य की पैनी धार है तो कहीं व्यंग के तीखें तीरों की चुभने दिल में महसूस होतीं हैं। ये साहित्यिक मनोवैज्ञानिक हैं। कवि ने 'बेटी बचाल्यो' कविता के माध्यम से बेटी बचाओ, बेटी पढाओ का संदेश दिया है। जंग जीत चला, चढणे वाले चढया करै, भारत माता की जय, बोली लेखनी लेखक से, आदि कविताओं में ओज, वीर, वीभीत्स, भयानक रस आदि के द्वारा देश प्रेम देश भक्ति का जोश जगाया है, हास्य में मजाक कुं सूँ,

यो के होरहया सै, व्यंग्य में कैसी चली दुरगी चाल। पुस्तक झंकार भी टंकार भी अनेक विषयों को समेटे हुये है। यह सपष्ट होता है कि कवि के पास भाव, विचार, शब्द भाषा का अथाह भ.डार है। मेरा दावा है कि यह पुस्तक कवि दलबीर फूल की ख्याति में चार चाँद और लगायेगी। इसमें पाठकों का मनोरंजन ही नही बल्कि एक ऐसा संदेश जो भाषा को समृद बनाता है, देश की समग्र उन्नति का परिचायक है, देश भक्ति, राष्ट्रप्रेम, ओज का संववाहक है, सामाजिक सदव्यवहार व समाज सुधार का स्रोत है काव्य शास्त्र की विधा का केन्द्र बिन्दु है इस पुस्तक में मिलता है। विद्वानों के संग चले हो, सदा ही चलता सफर रहे बढे लक्ष्य की और कदम पैर तुम्हारे स्थिर रहें वीरों का गुणगान लेखनी लिखे तुम्हारी भारत माँ, वंदन हो नाम तुम्हारा अमर रहे। इन्ही शब्दों के साथ मैं कवि दलबीर फूल को इस अनुपम कृति के लिये शुभाशीष और बधाई देता हूँ।

त्रिलोक 'फतेहपुरी'
सेवा सम्पन्न प्रवक्ता, मंड़ी अटेली

लोक संस्कृति का चितेरा कवि

काव्य शास्त्र की विधा से परिचित करवाता है। दलबीर शब्दों, भावों विचारों व लोक संस्कृति का चितेरा कवि है। इनकी अगली पुस्तक हरियाणवी भाषा व संस्कृति का प्रचार व प्रसार करने वाले कवि दलबीर फूल एक निष्ठावान, सदाचारी, गायक, कलाकार व संगीतकार है। कवि दलबीर हास्य व्यंग्य की अनूठी मिसाल, ओज, वीर, वीभीत्स कथानक रसों आदि के माध्यम से व्यक्त करता है तथा 'झंकार भी, टंकार भी' साहित्यजगत में हलचल मचाने को तैयार है। यह पुस्तक पाठकों में जागृति, जोश, उत्साह, सेवा भावना, परोपकार आदि भावनाओं का संप्रेषण का कार्य करेगी। सरल सौम्य स्पष्ट उदार स्वभाव वाले कवि दलबीर फूल मंच के सिद्धहस्त कलाकार है। उनकी यह पुस्तक 'झंकार भी, टंकार भी' साहित्य जगत में अपनी अनूठी पहचान बना कर पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी। इस कृति के लिए मैं दलबीर फूल को शुभाषीश व बधाई देता हूँ और इन्हीं शब्दों के साथ-

हास्य व्यंग्य की टंकारों
की तुमने तलख लगाई है
काव्य छंद की झंकारों की
तुमने झलक दिखाई है
शब्दों, भावों, उद्‍गारों का
गागर में सागर है
फूल तुम्हारी रचनाओं ने
जग में अलख जगाई है

हलचल हरियाणवी
हास्य एवं व्यंग्य कवि
बीकानेर, रेवाड़ी

शुभकामनायें

दलबीर फूल अद्‌भुत गायक, जो खुद ही संगीतकार भी है, इस कलमवीर के गीतों में झंकार भी है, टंकार भी है। कुछ लिखता है तो भाता है, गाता है तो छा जाता है और इसका यही निरालापन रहस्य है पर स्वीकार भी है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी दलबीर सिंह फूल हरियाणवी लोक संस्कृति के प्रतिनिधि के रूप में जब भी जहां भी प्रकट हुए हैं, अपने ठेठ देहाती अंदाज, वेशभूषा और सादगी के चलते सभी का दिल जीतने में सफल रहे हैं। आशा ही नहीं विश्वासभी है कि अपने श्रोताओं में लोकप्रिय दलबीरअपने बहुप्रतीक्षित काव्य संग्रह 'झंकार भी टंकार भी' के माध्यम से काव्यरसिक पाठकों के मन को भी आंदोलित करने में सफल रहेंगे। अनेकानेक शुभकामनाओं सहित,

कृष्ण गोपाल विद्यार्थी
संयोजकः जनता कवि दरबार
जनता टीवी, नयी दिल्ली
फोन नं. 8814938814

शुभाशीष

कविता आंसू भी है और आग भी है। कविता पीर भी है फकीर भी है और द्रोपदी का चीर भी है। कविता बंजर खेत में लहलाती फसल भी है और समुद्र की तूफानी लहरों पर डूबती उतरती भंवर में चक्कर काटती नाव भी है। कविता अंगद का अडिग पाँव भी है, पीपल की छाँव भी है और तिल-तिल कर मरता हुआ गाँव भी है। कविवर दलबीर 'फूल' लिसान का सद्ध काव्य संग्रह 'झंकार भी टंकार भी' काव्य का एक सुन्दर गुलदस्ता है। इसमें विभिन्न रूप, रंग आकार-प्रकार और अलग-अलग सुगन्ध सुरभि की सुवासित वीथियां हैं जिनमें घूमना-घूमाना एक आनन्द दायक अनुभव देने वाला है।

अनेक विषयों को लेकर लिखी गई कविताएं कवि की शक्ति और सामर्थ्य का परिचय देने में समर्थ है। यह नवयुवक कवि यदि अधिक श्रम करे और गहन साधना की डुबकियाँ लगाये तो मेरा विश्वास है कि यह भविष्य में अनेक दुर्लभ मणि-माणिक्यों से माँ सरस्वती के मन्दिर का मनोमुग्धकारी शृंगार करने में सफल हो सकता है। छन्द में लिखना खाला जी का घर नहीं है। आज कविता छन्द से लगभग दूर-सुदूर जा चुकी है। संतोष का विषय है कि कवि दलबीर 'फूल' छन्द की पूरी समझ रखने वाला कवि है ओर इसका प्रमाण है ओज, वीर, वीभीत्स का सफल निर्वहण। अधर छन्द, तालव छन्द में लिखी कविता भी कवि की प्रतिभा का जीता-जागता प्रमाण है। अमात्रिक छन्द में अच्छी रचना लिख लेना भी कवि की अतिरिक्त विशेषता है। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि कवि में विरल संभावनाएं छिपी हुई हैं जो समय के साथ-साथ मैं कवि धर्म का निर्वाह करने वाले 'फूल' से यह अपेक्षा करता हूँ कि वे इस दुर्वासित वातावरण को विस्तार लें पायेंगी झंकार के साथ टंकार ललकार के साथ फटकार से संयुक्त ये रचनाएँ पाठकों को प्रभावित करेंगी ऐसा मेरा विश्वास है। सुवासित करने में सक्षम ओर सफल होंस्रे मेरी बहुत-बहुत सद्भावनाएं, अमिट शुभकामनाएं और अग्रज रूप में शुभाशीष।

शुभेच्छु
डा. सारस्वत मोहन मनीषी
सेवा सम्पन्न प्रोफेसर, दिल्ली विश्विद्यालय

इन्द्रधनुषी विचारमाला

'झंकार भी टंकार भी' एक ऐसी पुस्तक है जिसमें समाज के विभिन्न पहलूओं को छूआ है। यह पुस्तक एक और जहाँ युवाओं में वीरता के गुण उभारती है तो दूसरी और भ्रष्टाचार ओर नेताओं पर व्यंग करती है, बोले तो यह पुस्तक सभी रसों से भरी हुई है लेकिन हास्य ओर वीर रस की प्रधानता है। संस्कारों की बात इस पुस्तक में बड़े ही सहज भाव से कही गई है साथ ही बेटी बचाओ का संदेश भी, कवि ने नेताओं पर व्यंग करते हुए लिखारू-सपने दिखाने वाले आगये,लाली पाँप देकै बहकाने वाले आगये। बेटी बचाओ के संदेश देते हुए कहा-

समय की पुकार बेटी पुकारे,
गैरों से डर नहीं अपने ही मारे।

ढोंगी बाबाओं पर व्यंग करते हुए लिखा-

ये भोगी बनकर बैठे योगी,
इश्क नशे के पीड़ित रोगी।
नित नये भेष बदल के ढोंगी,
हो गये माला माल,
कैसी चली दुरंगी चाल।

संस्कारों पर तो देखिये कवि की कितनी गजब कलपना है। बुढा घर का रुखाल़ा होसै, योहे सै जो बिना ताल़ी का ताल़ा होसै। कवि ने अपनी हर एक रचना में यती, गती, अलंकार, मात्राओं का प्रयोग कर अपनी प्रखर बुद्धि का अच्छा परिचय दिया है। समाज में बड़ी ही तेजी से बढ रही झूठ, कपट, छल, बेईमानी पर कुछ इस प्रकार लिखा है-

झूठ बोले तल़वा चाटै, ऐसे माणस तै डरियो,
जड़ काटै हँसते हँसते नमस्ते दूर तै करियो।

कवि ने अपनी इस पुस्तक में सभी सामाजिक बुराइयों को उठाया है। कवि ने

हास्य व्यंग ओर वीर रस के द्वारा सहज भाव से अपनी बात को प्रकट करते हुये पाठक का मनोरंजन के साथ-साथ ध्यान आकर्षित कर ना चाहा है कि समाज में जो बुराइयाँ व्याप्त हैं यदि उनकी तरफ ध्यान नही दिया गया तो समाज का विकास रुक जायेगा। यही पुस्तक के निहित भाव हैं। अन्त में कवि दलबीर 'फूल' को इस इन्द्र धनुषी विचार माला के लिए साधुवाद।

डॉ. महावीर 'निर्दोष'
शिक्षाविद् एवं साहित्यकार

छन्दों का गुलदस्ता

'श्री नारायणी जी', 'आथूणा की हवा चालग्यी', 'हरियाणवी बारामासी कुण्डलियां' पुस्तक के बाद कवि की अगली पुस्तक आप सभी सुद्धी पाठकों के बीच में छन्दों का गुलदस्ता 'झंकार भी टंकार भी' कवि की एक ऐसी पुस्तक है जो समसामयिक मुद्दों पर आधारित है। इन्होने अपनी इस पुस्तक में छन्द का विशेष ध्यान रखते हुये देशभभक्ति, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, भारतीय त्यौहार, अंधविश्वास, माँ की महिमा, भ्रष्टाचार, मातृभाषा, शहीदों का शौर्य जैसे विषयों पर लेखनी चलाई है। इसके साथ इन्होने ढोंगी बाबाओं का खुलासा किया है कि वे किस प्रकार भोली-भाली जन्ता को ठग रहे हैं। इस विषय पर कवि की कविता 'कैसी चली दुरंगी चाल', 'गुरू नाम बदनाम किया' में व्यंग्यात्मक शैली द्वारा वर्तमान में गुरूओं की स्थिति को स्पष्ट किया है। आज के समय में नेता जी भी आम जन्ता को लूट रहा है उनके भी वास्तविक चेहरे सामने नही होते नेताओं पर भी व्यंग्य करते हुये कवि ने 'नेता जी' व नेता जी दागी हो गये कवितायें लिखी हैं।

सामाजिक बुराइयों की ओर आम जनता का ध्यानाकर्षित करने के लिये 'नशा नरक की खान अन्धविश्वास' कविताएं लिखी हैं। मातृभाषा का महत्व मानव के लिये बहुत अधिक होता है। इसके अभाव में वह उन्नति नही कर सकता। उस पर इन्होने हिन्द की भाषा व सारे सीखों मातृभाषा कविता लिखी। ध्यान हरि का करले, कर भजन रह मगन, महिमा ओम की गा कविताओं से कवि के छन्द शास्त्र का ज्ञान होने का संकेत मिलता है ये कवितायें अधर छन्द, तालव छन्द, अमात्रिक छन्द में रचित हैं। इन छन्दों में लिखना कोइ छोटी बात नही है। भारत माँ व शहीदों के गुणगान पर आधारित उनकी 'भारत माँ की जय', 'बेहाल है भारत माँ', 'शहीदों का बलिदान', 'बोली लेखनी लेखक से' व 'जंग जीत चला' प्रमुख हैं। इसके साथ ही कवि संस्कारों की बात याद दिलाते हए 'पिलाते ठण्डा पानी' व 'प्यासा पंछी डाल का' द्वारा ध्यानाकर्षित करते हैं। यह पुस्तक सभी रसों से भरपूर है। पाठक को यह अच्छी लगेगी क्योंकि इतनी विविधता अन्य पुस्तकों में नही मिलती इसके साथ ही कवि समाज में व्यापत बुराइयों की ओर समाज के लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सफल होगा।

डॉ. सतबीर इन्दौरा
शिक्षाविद एवं साहित्यकार

लोक संस्कृति के परिचायक

परम श्रद्धय श्री दलबीर 'फूल' ग्राम लिसान जिला रेवाड़ी निवासी जाने माने लोक कवि गायक व कलाकार हैं। आपकी प्रकाशित पुस्तकों में साहित्य लोक संस्कृति एवं समाज सुधार का एक उत्कृष्ठ अनूठा उदाहरण देखने को मिलता है। आप ग्रामिण परिवेश के सूक्ष्म व स्थूल आयामोंसे अति परिचित हैं। सचमुच में आप समाज के युग द्रष्टा से नजर आतें हैं। आपके साहित्य के पठन पाठन से आनंद कीअनुभूती होती है तथा प्रेरणा भी मिलती है। आपकी यह समाज सेवक की भूमिका समाज को जागरुक करती है।

आपका अथाह शब्द भंडार हरियाणवी लोक संस्कृति को समृद्ध बनाने में सहायक है। आपकी पांचवी पुस्तक 'झंकार भी टंकार भी' शीघ्र प्रकाशित होने जा रही। जिसका शीर्षक ही द्विअर्थी नज़र आता है। इसमें हास्य के साथ-साथ संदेश भी निहित है मैं स्वयं तो विज्ञान और चिकित्सा विषय से जुड़ी हूँ लेकिन आप जैसे विद्वान महापुरुषों के साहित्य से भी प्रेरणा पा रही हूँ। मैं आदरणीय श्री दलबीर 'फूल' जी को इस नव कृति 'झंकार भी टंकार भी' के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ और कामना करती हूँ कि इनकी यह पुस्तक साहित्य जगत में नये मुकाम को हासिल करेगी। सभी पाठकों से निवेदन है कि श्री दलबीर 'फूल' की इस पुस्तक को पढकर, इन्हे अपने विचारों से अवगत करवायें।धन्यवाद। पुनः बधाई।

आपकी स्नेहाकांक्षी
डॉ. दीपिका यादव
स्त्री रोग विशेषज्ञ
जयपुर (राजस्थान)

आभार

माँ सरस्वती वीणा पाणी की अनुकंपा से आज पुस्तक 'झंकार भी टंकार भी' के प्रकाशन के शुभ अवसर पर मैं अपने पूर्वजों सभी आचार्यों, गुरुजनों समस्त नाते रिश्तेदारों आशीष दाताओं दोस्तों मातृ शक्ति बाल क्रिडा का सार्दिक हार्दिक आभारी हूँ। पुस्तक का नामकरण आदरणीय श्री राजकिशन नैन जी ने कोसों दूर बैठे चल दूरभाष के माध्यम से ही अपनी तीव्र बुद्धि बल का प्रयोग कर मात्र चन्द क्षणों में ही पुस्तक का नाम 'झंकार भी टंकार भी' रखने का सुझाव दिया जो मुझे अति उत्तम प्रतित हुआ। दो शब्दों के शीर्षक में पूरी पुस्तक को समेटना गागर में सागर समाहित करने का कार्य है।

सरस्वती के अग्रज पुत्रों में जिनके नाम आते हैं उनमें कुछ नाम हास्य के सम्राट गुरु जी आदरणीय श्री हलचल हरियाणवी, सेवा सम्पन्न प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय राष्ट्रीय कवि आदरणीय श्री सारस्वत मोहन मनीषी जी, सेवा सम्पन्न हिंदी प्रवक्ता आदरणीय श्री त्रिलोक फतेहपुर, समाज सेवी आदरणीय डॉ. महावीर निर्दोष जी, डॉ. सतबीर इंदौरा जी, हरियाणवी सतम्भकार सत्यवीर नाहडिया, संगीत प्रवक्ता भाई प्रदीप महरोलिया ने अपनी कलम से मेरी पुस्तक में शब्दों के नये-नये रंग भर पुस्तक में चार चांद लगा दिये।

मैं इन विद्वत जनों का आजीवन ऋणी रहूँगा। इस पुस्तक के प्रकाशन में ग्राम लिसान वासी गाँव की प्रथम चिकित्सक डॉ. दीपिका यादव स्त्री रोग विशेषज्ञ जयपुर राजस्थान सुपुत्री आदरणीय श्री लक्ष्मण सिंह यादव रिटायर्ड इंजि. नेवी का विशेष योगदान रहा। मैं बहन डॉ. दीपिका यादव का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मरे सहृदय मित्र, शुभचिन्तक, प्रबुद्ध पाठकों पर मुझे पूरा विश्वास ही नही पूरा भरोसा भी है कि वो सब अपने इस नये संकलन को अपना प्यार देंगें और गँलतियों से अवगत करायेंगे। धन्यवाद।

दलबीर 'फूल'
रेवाड़ी (हरियाणा)

अनुक्रम

मेरा पता : 21
ना इसा सम्हाली देख्या सै : 22
दुश्मन पै पड़ग्यी गाज सुणो : 23
बोली लेखनी लेखक से : 24
जंग जीत चला : 26
म्हारा सत्-सत् नमन : 27
मजदूर की व्यथा : 28
देशी का खाणा, खावै था हरियाणा : 29
सपने दिखाने वाले : 31
झूठ बोले : 32
अपनों की मार : 33
रक्तदान : 34
दुखिया की पुकार : 35
समझो अर समझाओ : 36
बेहाल कर दिया : 37
सावधान इंसान : 38
कहाँ महफूज हूँ मैं : 39
लल्ला-लल्ला लोरी : 40
बेटी बचाल्यो : 41
भारत माँ की जय : 44
महिमा ओम की गा (तालव छनद) : 46
ध्यान हरि का करले (अधर छनद) : 47
कर भजन रह मगन (अमात्रिक छनद) : 49
यो के होरहया सै : 50
लाम्बी उमर पाण का नुसखा : 52
एक चीज़ भूलग्या : 54
कैसी चली दुरंगी चाल : 56
चढणे वाले चढ्या करैं : 57
इज्जत का कमाणा : 59
लंगड़ा हुआ समाज सुणो : 61

म्हारी हाथ आल़ी चाक्की : 63
अपने : 65
चुनाव : 66
नव संवत्सर : 67
मनाओ संवत्सर त्यौहार : 68
माँ : 69
फागण के धमाल : 70
धन्य मेरी सरकार : 71
मजाक करुं सूं : 72
रामकला : 73
बुड्ढा माछर : 74
सामाजिक अर शारीरिक दूरी (लोक डाउन में) : 75
पूल़ा की छांद हमारी : 77
कड़वा फल़ बुढापा का : 79
बनो हिंदी भाषी : 80
जूत्ते बणा नैक टाई : 81
सारे सीखो मातृभाषा : 83
लाज खून की राखिये : 84
दारू की बोतल : 85
सलूणी राखी का त्यौहार : 87
महंगाई : 88
भंयकर रूप धर चढी महंगाई सर : 88
अभिमान : 89
एक याद पुराणी आई कहाणी : 90
भोल़े की बारात : 92
तिरंगा ऊंचा रहे हमारा : 93
बेट्टी को बचाणा सै : 94
आप बित्ती : 96
कहूं गाथा अंजनी लाल की : 98
तूं करले हरि तै प्यार : 101
गाथा कृष्ण कनहाई की : 102
हो भोले भण्डारी : 104

मेरा पता

मै आर्य देश का वाशी
जिसे कहते हैं हिन्दूस्तान
धरम हिन्दू है मेरा
करुं मैं वेदों का गुणगान
हरि का हो गया आणा
यो हरियाणा मेरा राज्य
दलबीर फूल मेरा नाम
जिला रेवाड़ी गाम लिसान

ना इसा सम्हाल़ी देख्या सै

हो बड़े-बड़े रे कहै गये
ना इसा सम्हाल़ी देख्या सै
करता रखवाल़ी देख्या सै

धोल़ी डाढी धोल़ा बाणा
चढ घोड़े पै फेरी लाणा
दशों दिशा म्हं फिरै घूमता
यो डाल़ी-डाल़ी देख्या सै
करता रखवाल़ी देख्या सै

गामके फौजी जिक्र चलावैं
खड़या पोस्ट पै त्यार बतावैं
हर संकट मैं साथ निभावैं
यो संकट टाल़ी देख्या सै
करता रखवाल़ी देख्या सै

हारी बिमारी का काटै रोल़ा
खड़ी फ़सलपै ना आणदे ओल़ा
तेरी दया तै मोज मनाता यो
हाल़ी-पाल़ी देख्या सै
करता रखवाल़ी देख्या सै

दलबीर फूल तेरी महिमा गावै
प्रदीप अनील तनै दिलतै ध्यावै
तेरे भवन मैं मक्खन पुरी भी
बजाता ताल़ी देख्या सै
करता रखवाल़ी देख्या सै

दुश्मन पै पड़ग्यी गाज सुणो

वोतो चढ घोड़े पै चाल पड़यारी
ईश्‌ रपुरी महाराज सुणो
दुश्मन पै पड़ग्यी गाज सुणो

झट घोड़े पै काट्ठी सजाई
तेग हाथ ले एड लगाई
वोतो खूब सजा जांबाज सुणो
दुश्मन पै पड़ग्यी गाज सुणो.....

सांवत बाबा गरजण लाग्या
तकत महिका लरजण लाग्या
झट ऐसी दी आवाज सुणो
दुश्मन पै पड़ग्यी गाज सुणो......

खाई लांघ सेना म्हं बड़ग्या
दुश्मन की छाती पै चढग्या
गई फौज भरत की भाज सुणो
दुश्मन पै पड़ग्यी गाज सुणो......

'फूल' धजा पै बरसण लाग्या
गाम लिसान हरसण लाग्या
बजैं खुशी के साज सुणो
दुश्मन पै पड़ग्यी गाज सुणो......

बोली लेखनी लेखक से

बोली लेखनी लेखक से, स्वछन्द लिखो तुम तूफानी
जग में जय-जय कार हो उनकी, देगये जो कुर्बानी

कल्पनाओं के सागर में तुम गहरा गोत्ता ला करके
हो छन्दबद्ध हर वाक्य तुम्हारा निकले ऐसे नहा करके
शब्दों के मोती चुन चुनकर एक सुन्दर हार बना करके
जयघोष सुनाता रहे सदा वीरों के गले में जा करके

झनझना उठे दुनिया के कर्ण, ये वीर हैं हिन्दुस्तानी
जग में जय-जय कार हो उनकी, दे गये जो कुर्बानी

मुझे चला वो लेख लिखो जो दफना दिये दिवारों में
पद्मनी का जोहर लिखो जो कूद गई अंगारो में
राजगुरु सुखदेव भगतसिहं चमके चाँद सितारों में
वीर विनायक दामोदर भी गरजे कलम की धारों में

गुलामी के अंधीयारोमे जो लुटा गए ज़िंदगानी
जग में जय-जयकार हो उनकी, देगये जो कुरबानी

माँ के दूध का करज लिखो जिन वीरों ने चुकाया था
खड़ग म्यान में फड़क उठी रणभेरी बिगुल बजायाथा
क्रूर सिकन्दर भगा भारत से नया इतिहास रचाया था
दीप दान को लहूसे भरकर जगमग दीप जलाया था

जलते हुवे इस अखण्ड दीप की समझों जरा कहानी
जग में जय-जय कार हो उनकी, दे गये जो कुर्बानी

चिंगारी का रूप लेखनी शोला बनकर भड़क उठे
निस्तेज हो गये योद्धा जो भुजदण्ड उनके फड़क उठे
आँखों में ज्वाला वाला रोद्र रूप बिजली की ज्यूं कड़क उठे
सुन नाँद भयंकर वीरों का दुश्मन की छाती धड़क उठे

कलम साथ मे खड़क उठे जय बोले मात भवानी
जग में जय-जय कार हो उनकी, दे गये जो कुर्बानी

जंग जीत चला

जंग जीत चला, मौत से हार गया
भारत माँ का करज उतार गया

आने में क्यूं देर लगाई
बहना रोई पकड़ कलाई
भाई बहन का प्यार गया
जंग जीत चला, मौत से हार गया
भारत माँ का करज उतार गया

बिन साजन के सजनी अधूरी
बिंदिया पायल मांग सिन्दूरी
छूट सभी सिंगार गया
जंग जीत चला, मौत से हार गया
भारत माँ का करज उतार गया

ग़मी खुशी ये कैसी कहानी
सीना चौड़ा आँख में पानी
मात-पिता का दुलार गया
जंग जीत चला, मौत से हार गया
भारत माँ का करज उतार गया

बलिदान मेरा ये व्यर्थ नै जाये
तिरंगा हमारा झुकने ना पाये
सौंप के हमको भार गया
जंग जीत चला, मौत से हार गया
भारत माँ का करज उतार गया

म्हारा सत्-सत् नमन

श्वेत लिबास में कुछ
शिशकती जिन्दा लहास
जिनकी चमकती लाल आँखे
कुछ कहे रही थी खास
अब नही खनकेंगीं इन हाथों में
चुड़ियों की खनखनहाट
अब नहीं देखेंगी यें आँखें
किसी के आने की बाट
विवाह मण्डफ में भरा जिसने
मांग में चुटकी भर सिन्दूर
आज वो हमसे रुठकर
क्यों हो गया है दूर
इन्ही आँखों ने देखी
अपनी होती बरबादी
अपना सब कुछ लुटा
तब जाके मिली आज़ादी
पिता पुत्र ओर भाई
भारत माँ पर शहिद हो गये
देश की आजादी के लिये
नये बीज बो गये
चण्डि वैष्णो दुर्गा माँ पर
मिठाई के पीस चढातें हैं
पर माँ भारती के चरणों में
वीर अपना शीश चढातें हैं
उन्ही वीरों के शीश लहू से
आबाद है ये वतन
उन वतन के शहीदों कों
म्हारा सत्-सत् नमन
म्हारा सत्-सत् नमन

मजदूर की व्यथा

करता जो दिन रात खुभात गात तपाता है
सच्चे अर्थों में वोही मजदूर कहलाता है

सरपे ईट पीठ पर बच्चा दोनो भार उठाये
तन सूखा ओर पेट भूखा रोट्टी हाथ नै आये
मेवा ओर मिष्ठान्न समझ कुछ चने चबाता है
तनसे निकले श्रमजल से वो प्यास बुझाता है
सच्चे अर्थों में वोही मजदूर कहलाता है

कोट्ठी बंगले महल बनाता करके मेहनत भारी
खुद का घर बणावण खातिर सारी उम्र गुजारी
नही बना आवास कभी, अष्ट पहर कमाता है
सपनो का हो महल मेरा, यूँ ख़्वाब सजाता है
सच्चे अर्थों में वोही मजदूर कहलाता है

कामकरे कपड़ों की मीलमें खुदका बदन उ?ााड़ा
नंगे पैर नये शूज बणावै ढंग मजदूर का माड़ा
मांग पुराणे सूट-बूट वो फोटो खिचवाता है
मस्तमोला छोड़ फिकर ग़म हरदम मुश्काता है
सच्चे अर्थों में वोही मजदूर कहलाता है

हाय गरीबी नागिन काली करै घणी परेशान
इनको मिलना चाहियें रोट्टी कपड़ा ओर मकान
मजदूर ही राष्ट्र का एक भाग्य विधाता है
नहीं पशारे हाथ कभी मेहनत की खाता है
सच्चे अर्थों में वो ही मजदूर कहलाता है

देशी का खाणा, खावै था हरियाणा

बात ग्यान की
म्हारे खान पान की
एक मिशाल
जग सरहावै था
सूस्त्रर भागै
जौ-चणा जो खावै था
अध्बिला दूध
गरमी भगावै था
अंगाकड़ा का
सुवाद बिठावै था
बथवा साग
सांगर मेथी राई
गजरा साथ
मिलै अड़ै चौलाई
साट्टी जो खाता
हो गुर्दे की, सफाई
सींगरी टींट
खाता जो सिरयाई
गुड़धाणी का
सुवाद घणा न्यारा
पिच्चू पीह्ल भी
रोग खोवंती म्हारा
पिलपोट्टां नै
खावैं बाल़क सारा
सीरा सुहाल़ी
पूड़ा सक्कर पारा
गुलगुला नै

दे दिया एक नारा
मेरा प्रदेश
सारे जग मैं न्यारा
देशी का खाणा
खावै था हरियाणा

सपने दिखाने वाले

सपने देखो दिखाने वाले आगये
लालीपाप देकै बहकाने वाले आ गये

मिलेगें महल अटारी होगी दूर बेरोजगारी
किश्मत चमकेगी थारी जारी कोशीशें सरकारी
चणों के पेड़ पै चढाणे वाले आगये
सपने देखो दिखाने वाले आगये

होगा चाँद ऊपर जागा जाके प्लाट भी कटवाणा
घर एसी दार बनवाणा मिलै पक्या पकाया खाणा
मेंढक बरसाती टर्राने वाले आ गये
सपने देखो दिखाने वाले आगये

क्या सण्डे क्या मण्डे चहूँ ओर बैनर-झण्डे
कहीं बिरियानी कहीं अण्डे नित नये रचाते फण्डे
अंग्रेजी देशी ठर्रा प्याणे वाले आ गये
सपने देखो दिखाने वाले आ गये

भाषण में भाईचारा हो भाई-भाई से न्यारा
आपस मैं लट्ठ बजवाकै कुछ अपणी वोट पकारा
पाठ प्रेम का पढाने वाले आ गये
सपने देखो दिखाने वाले आ गये

झूठ बोले

झूठ बोले तल़वा चाटै, ऐसे माणस तै डरियो
जड़ काटै हँसते-हँसते, नमस्ते दूर तै करियो

झूठ कपट छल बेईमाना जाँकै भरा हुआ हो रग-रग मैं
उसपै ना विशवाश करो जाँकै धुरतपणा हो पग-पग मैं
पहला बोलै पाछै तोलै, मत झूठी हाँ भरियो
जड़ काटै हँसते-हँसते, नमस्ते दूर तै करियो

सवाँन हुआ हैरान देख, नर गजब के तल़वे चाटै सै
किलकांट सोच रहया रंग बदलण मैं मेरे कान भी काटै सै
बस अपणा सांट्ठा साट्ठैसै कोय जीवो चाहे मरियो
जड़ काटै हँसते-हँसते, नमस्ते दूर तै करियो

दिल के अन्दर जहर भरया हो चेहरे तै मुश्काये जा
पहले घर मैं फूट गेर दे पाछै नयाव चुकाये जा
महल चिणाकै हाथ काटले, मत इतना गिरियो
जड़ काटै हँसते-हँसते, नमस्ते दूर तै करियो

दलबीर कहै प्रदीप बतावै तू किस किस तै बचपावैगा
आच्छा भूण्डा करम कर्योड़ा एक दिन आगै आवैगा
धरम की राही तज मत भाई पत राखै सावरियों
जड़ काटै हँसते-हँसते, नमस्ते दूर तै करियो

अपनों की मार

कटी जब-जब मेरी गर्दन, चली तलवार अपनों की
गिरा नहीं खून का कतरा, थी ऐसी मार अपनों की

हजारों ग़म जमाने के, सताने आये थे मुझको
कायल हो वो लौट गये, देखकर खार अपनों की

देख कर थम गई आँधी, रस्ता बदल गया तूफान
भुजी नहीं आग मेरे घर की, बही ब्यार अपनों की

मिला नहीं कोई केशव, सुनादे जो मुझे गीता
चलाऊँ तीर मैं कैसे, सामने कतार अपनों की

खबर सुन मेरे मरने की, दिखाये जग को आंसू
अर्थी जला मेरी, मिटी नहीं तकरार अपनों की

रक्तदान

हो रक्तदान से तुम ना डरो, हँस हँसकर तुम दान करो
लाचारों के कष्ट मिटा, खुशियों से तुम झोली भरो

हो जिनकी ज़िन्दगी अधर में रही
उनकी सेवा है बस एक यही, कही ग्रन्थो ने बात सही
मजबूरी तुम उनकी हरो, हँस-हँसकर तुम दान करो

हो मनकी भ्रांति को दूर भगा
दुखियों को तू दिल से लगा, दगा होता ना किसका सगा
महादान देके भव से तरो, हँस-हँसकर तुम दान करो

हो जिसने शोणित का दान दिया
अपने जीवन को सफल किया, बढिया करके कर्म वो जिया
बस उनका ही ध्यान धरो, हँस-हँसकर तुम दान करो

भला करले भला जो मिले
किसी बगिया का फूल खिले, सिलसिले यूँही जग में चले
निज फर्ज से तुम ना टरो, हँस-हँसकर तुम दान करो

दुखिया की पुकार

बड़ी आस लगाकेआई दरबार मेरी माँ
इस दुखिया की सुनले, पुकार मेरी माँ
जय शेरों वाली, भरो झोली खाली

कमा-कमा कै हार लई ना पार पड़ी मेरी
चोगर दें सब लोग कहैं उधार पड़ी मेरी
धन्धा चोपट हुया गया, रुजगार मेरी माँ
इस दुखिया की सुनले, पुकार मेरी माँ
जय शेरों वाली, भरो झोली खाली

पति कति कहया ना करता नित पीवै शराब सै
याणे बाल़क स्याणे होगे, ना मानै दाब सै
तेरे हाथ मेरी आब सै घर सुधार मेरी माँ
इस दुखिया की सुनले, पुकार मेरी माँ
जय शेरों वाली, भरो झोली खाली

बरत बडूलें रोज करुं नित फेरुं सूं माल़ा
मनै सुणासै तेरे दरपै खुलै किसमत का ताल़ा
तेरे हाथ मैं चाबी सै, खोल द्वार मेरी माँ
इस दुखिया की सुनले पुकार मेरी माँ
जय शैरों वाली, भरो झोली खाली

बड़े-बड़े पापी तारे आज दुखिया आई सै
करदै वाहे बात आज जो जग नै गाई सै
दलबीर करै तेरे दर पे प्रचार मेरी माँ
इस दुखिया की सुनले पुकार मेरी माँ
जय शेरों वाली भरो झोली खाली

समझो अर समझाओ

भारतवासी करो सामना, मिलकै इस महामारी का
समझो अर समझाओ सबको फर्ज सभी नरनारी का

भीड़ से रख हरदम दूरी चाहे हो कितनी मजबूरी
यो मिलणा फिर भी होज्यागा बचाले ज्यान जरुरी
पूरी ज़िन्दगी पड़ी मिलण की छोड़ लहारसा यारी का
समझो ओर समझाओ सबको फर्ज सभी नरनारी का

चिकतस्क लगे हुये दिन रात नही विश्राम गाड़ी एक स्यात
दया कुछ उन पर भी करल्यो है आखिर वो भी मानव ज्यात
साथ गात कै फिकर लग्या रहै कोरोना विषधारी का
समझो ओर समझाओ सबको फर्ज सभी नरनारी का

तेरै तो संग में है परिवार तू फिर भी लिकड़ै घरतै बहार
मरै खुद औरां नै मारै तुझे है बारबार धिक्कार
लाख टके की बात जाणले काम है जिम्मेदारी का
समझो ओर समझाओ सबको फर्ज सभी नरनारी का

लोकडाउन को मतना तोड़ यो मोदी कहरया हाथ जोड़
म्हारे तै ज्यादा चिंत्यासै समझ सब बांता का निचोड़
खोड़ दोबारा नही मिलैगी एक फूल कहै फुलवारी का
समझो ओर समझाओ सबको फर्ज सभी नरनारी का

बेहाल कर दिया

इस महामारी नै दुनिया का बेहाल करदिया
सबकै साहमी खड़या मौत का जाल करदिया

विषका पूरा भरया पड़या यो कोरोना विषाणु
छूणे-छाणे तै फैलै सै साचम साच बखाणु
ज्यान लेवा किटाणु नै जगत हलाल कर दिया
सबकै साहमी खड़या मौत का जाल कर दिया

ज्यान बचाणी सै तो भीड़ मैं करदियो बंद घुमाई
हाथ जोड़ कै करो नमस्ते चाहे हो गाढ़ी अशनाई
कोन्या बणी दवाई, खड्या यो सवाल करदिया
सबकै साहमी खड़या मौत का जाल कर दिया

सब ढाला के जीव जन्तु, योतो चीन खावै सै
अपणी करणी आपमरै संग ओरांनै मरवावै सै
मूरख मूढ अनाड़ी नै खड्या चण्डाल कर दिया
सबकै साहमी खड़या मौत का जाल कर दिया

इलाजतै बढिया परहेज बताया समझाओ नरनारीनै
दलबीर कहै हो सावधान इंसान समझ लाचारी नै
बड़ा-बड़ा भी इस बेमारी नै निढाल कर दिया
सबकै साहमी खड़या मौत का जाल कर दिया

सावधान इंसान

औरां की गलती तै सीखै, वो माणस स्याणा हो
सावधान इंसान यहाँ से, कोरोना भगाणा हो

शक्तिशाली एक देश बतायाए देशों मैं एक चीन
सब जीवों का सेवन करते जुरम करैं संगीन
रहगी धरी मशीन, पड़्या फेर पाछै पछताणा हो
सावधान इंसान यहाँ से कोरोना भगाणा हो

इटली मैं घर खाली होगे, ना मिली जगहं दफनावण की
अमरिका भयभीत हुया, नही दवा मिली बचावण की
भारत मैं पैर जमावण की, सोच रहया हड़खाणा हो
सावधान इंसान यहाँ से कोरोना भगाणा हो

पाकिस्तान हैरान हुआ, नही बात समझ मैं आरही
सुरसां मुख फैलावण लागी, सजनो ये महामारी
समझो देश के नर-नारी, इब अपणा देश बचाणा हो
सावधान इंसान यहाँ से कोरोना भगाणा है

प्रकृति से छेड़छाड़, खिलवाड़ करो कती बंद सुणो
साफ सफाई अपणाओ, मत फैलाओ कहीं गंद सुणो
दलबीर 'फूल' मतिमंद कहै, इब छोड्डो हाथ मिलाणा हो
सावधान इंसान यहाँ से कोरोना भगाणा हो

कहाँ महफूज हूँ मै

समय की पुकार, बेटी पुकारे
गैरों से डर नही अपने ही मारे

ममता की मूर्त बन गई डाकिन
मुझको खा रही, जैसे नागिन
हो के पापिन, सितम गुजारे

जिन्होंने दिखाये मुझे, बड़े-बड़े सपने
अस्मत लूटे मेरी, मेरे अपने
जनम जनम के साथी, बने हत्यारे

कदम कदम पे, दुश्मन जमाना
कहां महफ्यूज हूँ, कहां वो ठिकाना
मुझको बताना तुम, सोचो जरा सारे

मेरे बिन बोलो कैसे, सृष्टि रचाओगे
फूल बिना कैसे, चमन खिलाओगे
बेटी बचाओगे तो, होगें वार्ये न्यारे

लल्ला-लल्ला लोरी

लल्ला-लल्ला लोरा, दूध भरी कटोरी
छोहरां तै सब प्यार करैं, मरवाते क्यूं छोहरी

आदि शक्ति ये बतलाई, देवों नै भी ये प्रणाई
जग जननी ये कहलाई, झूठ रति ना इसमें माई
चण्डी, वैष्णों, दुर्गा माई, सरस्वती ओर गौरी,
लल्ला-लल्ला लोरी

त्योहारों में बड़ी यही है, मुशिबतों में अड़ी यही है
हर रहों में खड़ी यही है, लक्ष्मी बनके लड़ी यही है
फिर भी इसपे मार पड़ी है क्यूं बन्धनो की डोरी
लल्ला-लल्ला लोरी, लल्ला-लल्ला लोरी

इस बिन सारी धरा थृष्टि, इस बिन ना ये चले सृष्टि
दया धरम की करे वृष्टि, दूर-दूर तक गई दृष्टि
इस सारे संसार की तू ही धणी धोरी,
लल्ला-लल्ला लोरी

अंतरिक्ष म्हं जावण आळी, पर्वत को लंघावण आळी
खेलों को खिलावण आळी, राग-रागनी गावण आळी
शिक्षा का पाठ पढावण आळी, या भरै ज्ञान की बोरी
लल्ला-लल्ला लोरी, लल्ला-लल्ला लोरी

मिलकै आगै कदम बढाओ, सारे मिल यही कसम उठाओ
भ्रूण हत्या खतम कराओ, सारे मानव धरम अपनाओ
घर की होज्या दूर गरीबी, म्हारी धन की भरै तिजोरी
लल्ला-लल्ला लोरी, लल्ला-लल्ला लोरी

बेटी बचाल्यो

कवि के छोहरे का लगन था
साराहे तो गाम मगन था
लगन पै ही जिम्मणवार थी
जिम्मणियाँ की भरमार थी
ताऊ मोहल्ड़ का नोत्ता आया
जिम्मण का चढया हुमाया
ताऊ ठाकै डोगा चाल पड़या
पर दोनूं पोत्ता बाहर खड़या
उनका रुण्डा खुण्डा नाम था
दोनूवां का जिम्मण का ही काम था
उनकी बहाण का नाम सरम था
पर उसका सुभा घणा गरम था
न्यूं बोल्ली आज कित नोत्ता पाड़ोगे
अर किस गरीब नै उजाड़ोगे
आजतो एक कवि कै जाणा सै
उड़ै सब रसां का खाणा सै
प्रेम रस म्हलाडूवां की टोल़ी
हास्य रस म्ह बरफी धोल़ी
वीर रस म्ह तीन तरहां की तरकारी
करुण रस म्ह पूरी करारी
क्रोध म्ह चाऊमिन दही भल्ला
भयानक म्ंह हरी मिरच का हल्ला
घृणा म्ंह दारु का पीणा प्याणा
शांत रस म्ंह फल़ो का खाणा
अदभुत रस आईसक्रीम बताई
वातसल्य म्ंह डी-जे-अर सहनाई

बोलते बतळावतें कवि कै बारणै जालिये
अर बोल्ले ,जी हमतो आलिये
कवि महोदय नै देख्या वो सीन
नोत्ता एक, अर आये तीन
अन्नैतो ताळी बजावण लेजाया करुं
ताळी बजवा सो-सो रपैये पकड़ाया करुं
पर ये तो सारे खुराख खाणिया सीं
भरया कोठ्यार म्हा तै पार जाणिया सीं
भला ईब मैं के करुं
सोच साच कै बोल्या करो काम शुरु
ईब जिम्मण की इजाजत पाली
तीनवां नै तीन बरफियाँ की ट्रे ठा ली
एक ओड़ नै जा सफा चट करदी
खाल्ली ट्रे मेज तळै धरदी
फेर जिम्मण लागे होकै खुल्ले
कोठ्यार टूटग्या खतम रसगुल्ले
जिम्मणियाँ कै जाम लागग्या
जणो खड़ी फसल नै घाम लागग्या
इब तीनवां नै करकै तावळ
दही के डोंघे ठालिये चावळ
पण्डाळ म्हे खड़या तमासा होग्या
कवि के जीनै रास्सा होग्या
आलू छोल्ले दाळ कढी
इन सबनै खा निंगाह पनीर पै गडी
खाल्ली भगून्ने बाजण लाग्ये
जिम्मणियाँ बिना जिम्मी भागण लाग्ये
भाजल्यो-भाजल्यो होवण लागग्यी
कवि की आत्मा रोवण लागग्यी
कवि महोदय नै मारी किलकी

पण्डाल़ म्ह रोट्टी अर पूरी चिलकी
बोल्या थम ये भी चपेटल्यो
अर अपणे मन की मेंटल्यो
वो बोल्ये हमनैतो च्यार रस खायेसीं
इबै म्हारे छह रस बकायेसीं
कवि कै कुछ मामला समझ आया
भीत्तरतै दक्षिणा घाल तीन लिफाफे ल्याया
तीनवां नै एक-एक लिफाफा पकड़ाया
ऊप्परतै एक-एक स्याल उढाया
फेर सारां नै अपणा ठा सामान
बोल्ले जी कित करणा सै जलपान
कवि बोल्या थमनै सरम नही आई
सरम की तो चाल रही सीं दवाई
म्हारी बहाण का परोसा करो
उसके भी पचास साठ लाड्डू धरो
कवि बोल्या या बात थारी स्याणी सै
घर बैट्टी कन्या की शयान बढाणी सै
अनकै बिना किसी जिम्मणवार सै
बेट्टी बचाल्यो बस योहे मेरा प्रचार सै

भारत माँ की जय

बाप का बाप दादा होसै
गोड्यां तै ओर आख्यां तै आद्धा होसै
न्यूं दादा की टहल कम होथी
या देख पोत्ता कै सरम होथी
पोत्ता कै या बात खटकगी
पेट की बात धेट मै अटकगी
न्यूँ दादा पोत्ता का हेज न्यारा हो सै
अर मूल़ तै तो ब्याज प्यारा होसै
अन रूखां की छाया अन बूढां की मायां
जगत नै सरहाई
पर मेरे माँ-बाप कै समझ ना आई
वो अपणे अगत मैं कांट्टे बोण लागरे सैं
अर म्हारे संस्कारा नै जड़तै खोण लागरे सैं
बुड्ढा घर म्ह पाहड़ बरोबर होसै
उसका कखारा शेर की दहाड़ बरोबर होसै
मजाल सै कोय घर भीत्र बड़ज्या
अर म्हारे बुड्ढे सहामी अकडज्या
बुड्ढा घर का रुखाल़ा हो सै
योहे सै जो बिना ताल़ी का ताल़ा होसै
बाल़क अर बुड्ढे का एक मन बताया
कदे राज्जी कदे छोह म्ह कड़वे त्योर लखाया
ये मील के पत्थरां की ढाल़ मूंक होसैं
पर अनके हर ईसारे अचूक होंसैं
आज अनका कोय कहया ना करते
अनके बुढापे पै कोय दया ना करते
साबत उमर पेट कै पट्टी बाँध
काल़े बल़ध की ज्यूँ कमाये
अपणे सुख चैन खात्यर घर बणाये

पर आज घर बेट्टा बहूवां नै कबजा लिया
अर बुढा वरध आसरम भजा दिया
एक दिन मेरे बाप नै भी बुढा होणा सै
उसनै भी माथा पकड़ के रोणा सै
जो जिसा बोवैगा उसा ही काटैगा
फेर बेरा तो एक दिन मनै भी पाटैगा
मैं इसी गलती ना खाऊंगा
अपणा दादा नै पद्धी बिठा घरनै ल्याऊंगा
अन बुढां तै के थोड़ा फायदा होसै
कोय बाचणियाँ हो ये तो खुल्ला कायदा होसैं
अर बहोतसातो अन बुढां नै देख जल़ी सीं
पर अनकी तो गाल़ी भी फल़ी सीं
मेरा आं कविता नै पढकै थम मज़ाक मैं मत टाल़ दियो
आजै तै सारे अपणे बुड्ढां की सेवा मैं लागलियो
थारै धन की लाटरी लाग ज्यागी
अर थारे घरकी गरबी भाग ज्यागी
अर मैं गारन्टी तै लिखकै जाऊं सूं
थारे घर की गरीबी भाग ज्यागी
बस मेरीतो याहे एक अरजी सै
आगै थारी मरजी सै
पहल्या म्हारा देश न्यूहे तो महान था
हर घर म्ह बुढां का सम्मान था
आज फेरतै अन बुढां का सम्मान कराणा सै
अर अपणे देश को महान बनाणा सै
जिसी आई उसी दीसै कह
बोलो भारत माता की जय
भारत माता की जय

महिमा ओम की गा (तालव छन्द)

महिमा ओम की गा, विवेक का मग पावै
पग-पग पै यही माया आई
अम्बू मही वायु म्हं पाई
पावक व्योम भी उपमा गाई
कायम अम्बे महामाई, उमा ओमका अंग कहावै
महिमा ओम की गा, विवेक का मग पावै

गावै गवैया उपमा आपकी
ओम भगावै हवा पापकी
महिमा गावै यो माँ बापकी
भूमि के महामाप की, एक ओम इकाई आवै
महिमा ओम की गा, विवेक का मग पावै

ओम-ओम कोई भी गा के
विवेक वैभव को वो पाके
कामयाब हो गेह में आके
खोफ अहंका भगाके, अमि ओम ओक मै प्यावै
महिमा ओम की गा, विवेक का मग पावै

ओम कामका भय भगावै
ओम कायां बाग महकावै
कुम्भ कवि ओम काव्य गावै
माफी पीव पै पावै, भूमिका ओम की गावै
महिमा ओम की गा, विवेक का मग पावै

ध्यान हरि का करले (अधर छन्द)

अरै नर करले जरा सा चेत
काल तेरै लाईया सै घेरी

तेरै घर अन्दर करै खिलारी
कदे धरण कदे चढै अटारी
तृष्णा नै कर राखी घयारी
आकै चिड़ियाँ खाज्या खेत
ऐसी लाईये ना देरी
काल तेरै लाईयासै घेरी

काल जाल सदा लेकर हाथ
चक्कर काटै तेरे दिन रात
एक छण तजता ना तेरा साथ
गात नै तहस-नहस कर देत
काल तेरी करदेगा ढेरी
काल तेरै लाईया सै घेरी

काल अरि का करले ख्याल
रटले हरि कटै संकट जाल
अंत घड़ी तेरी याहे ढाल
संगी नार करै आखेट
कॉया संग चलै ना तेरी

कन्या राशी से लेकै ज्ञान
अधर छन्द का करता गान
खास ठिकाणा नगर लिसान

ये हर से लगा कै हेत
निज काटै सकल अनधेरी

अरै नर करले जरा सा चेत
काल तेरै लाईया सै घेरी

कर भजन रह मगन (अमात्रिक छन्द)

हर भज नर तर
भव जल मझधर

रट हर-हर बस
बन सबल
अन्त समय तन
भस्म अनल
तज घमण्ड चल, सत्य डगर
हर भज नर तर भव जल मझधर

मत बन नर
अधम श्रमण
सत्य वचन नर
हर दम श्रवण
मत भटक मन, डगर-डगर
हर भज नर तर भव जल मझधर

तहस-नहस कर
जगत अकड़पन
भगवन भजन कर रह मगन
चरण-शरण रह, तज पथ जर
हर भज नर तर, भव जल मझधर

रमझ-समझ घट
कथन करत
अध्यन गहन कर
छन्द धरत
कष्ट हरत पद, सफल कर
हर भज नर तर, भव जल मझधर

यो के होरहया सै

यो के होरहया सै?
माणस बीज बदी का बोरहया सै

अपणे स्वार्थ की बात उठाकै
ओरां के अरमान जल़ाकै
उसपै खिचड़ी अलग पकाकै
सपनों का महल संजोंरहया सै, यो के होरहया सै?
माणस बीज बदी का बोरहया सै

सड़क रेल को जाम करके
अपराध खुल्ले आम करके
जी चाहे सो काम करके
बीच चौराहे रोरहया सै, यो के होरहया सै?
माणस बीज बदी का बोरहया सै

गेरया फरक भाई-भाई म्हं
क्यूं मरैंसैं बिन आई म्हं
खुद अपणी खोद्दी खाही म्हं
मौत की नींद सोरहया सै, यो को होरहया सै?
माणस बीज बदी का बोरहया सै

खुदगर्जी मै जो टूल गये
संस्कारों को वो भूल गये
राहों म्हं बिछा सूल़ गये
सरकार तै झगड़ा झोरहया सै, यो के होरहया सै
माणस बीज बदी का बोरहया सै

खात्ता पित्ता अकल का अन्धा
जो धन दौलत का पूरा बन्दा
फेर क्यूं करता गन्दा धन्धा
अपणी सम्मपत्ती को खोरहया सै, यो के होरहया सै
माणस बीज बदी का बोरहया सै

मिल बैठ समाधान करो तुम
मत कोय नुकशान करो तुम
कानून का सम्मान करो तुम
क्यूं ओरां म्हं गलती टोहरहया सै, यो के होरहया सै
माणस बीज बदी का बोरहया सै

लाम्बी उमर पाण का नुसखा

भय बिन प्रीत ना होय
या बात जाणै सैं सबकोय
माँ बाप तै शुरु मैं डरणा
सकूल मैं गुरु तै डरणा
नोकरी मैं हिसाब तै डरणा
ब्या पाछै सहाब तै डरणा
यो डर सबतै न्यारा होसै
पर यो जी तै बी प्यारा होसै
इस डर का बेलण हथियार सै
जो करै कसूत्ती मार सै
जो अपणै आपनै शेर कहैसै
वो घरनै मुस्सा बणकै रहैसै
यो डर बड़ा-बड़ा नै बी नचावै सै
अर भूत्तां नै भी भगावै सै
इस डरतै ब्रह्मा जी डर्या आप था
लिछमी जी नै दिया श्राप था
इस डरनै विष्णु की चकरी कटादी
बैकुण्ठ मैं दिन की रात बणादी
शिवजी बी खूब डरया था
अर्धनारिश्वर रूप धरया था
या तो बड़ा-बड़ा की बातसै
म्हारी थारी के ओकात सै
कहण सुणनं की बात ओर होंसै
नारी सृष्टी की सिर मोर होंसैं
इनके बिना ना काम चालता
फल फूल बेल ना पात हालता

धन की देब्बी लिछमी बताई
ज्ञान धयान की सुरस्ती माई
ताकत की देब्बी दुरगा पाई
जग जननी म्हारी करै सहाई
जो माणस नारी तै डरया सै
उसनै जग म्हं नाम करया सै
योहे छोटासा नुसखा अपणाल्यो
अपणी ज़िन्दगी सफल बणाल्यो
जो नारी जाती का सम्मान करैगा
ईश्वर उसे लाम्बी उमर प्रदान करैगा

एक चीज़ भूलग्या

बाबा भैंया का भण्डारा था
जिम्मणियाँ का लारा था
ताऊ मोहल्ड़ का नोत्ता आया
जिम्मण का चढया हुमाया
लहरिया का साफा बाधँ कै
धोत्ती की लॉघड़ टाँग कै
ताऊ मस्ती म्हं टूलग्या
पर एक चीज भूलग्या
जा बाबा के दरबार मैं
बैठग्या जिम्मणिया की लार मैं
पत्तल़ मैं दस लाड्डू धराये
अर अपणी ओड़ सरकाये
जिब जिमणा करया शरु
माथे म्हं हाथ मार्या ईब के करुं
वा भूल्योड़ी चीज याद आई
पत्तल़ एक ओड़ नै बगाई
ताऊ कै एकदम करंट सा लाग्या
खड्या होकै तावल़ी सी भाग्या
गामआल़्या नै देख्या कोय लफड़ा होग्या
ताऊ कै गैल कोय झगड़ा होग्या
गाम आल़े ताऊ कै आगै अड़ग्ये
सारे ताऊ के पायां मै पड़ैग्ये
न्यूं किस तरहां जावोगे
पहलम लाड्डू खावोगे
ताऊ कै नाँशा अड़ग्यी
गल़ा म्हं आफत पड़ग्यी

गाम के बोल्ये ताऊ किमै तो बता
म्हारे तै के होग्यी खता
ताऊ की आँख भरआई
न्यूं अपणी कहाणी बताई
गाम नै साच्ची-साच्ची बताऊंगा
घर तै अपणै दाँत ल्याऊंगा
फेर थारे लाड्डू खाऊंगा
फेर थारे लाड्डू खाऊंगा

कैसी चली दुरंगी चाल

बाबाओं के देख नज़रिये, जन्ता हुई बेहाल
कैसी चली दुरंगी चाल

गुरु मन्त्र की फेरके बुरकी
टिकट काटते सबकी धुरकी
बात बतावैं बेगम पुरकी
बनके दीन दयाल, कैसी चली दुरंगी चाल

गिरगिट भी खाजाये धोखा
ये ऐसा रंग चढावैं चौखा
घात लगावैं देख कै मौका
तारैं बढिया खाल, कैसी चली दुरंगी चाल

छलसे भरे चरित्र इनके
ना कोय कर्म पवित्र इनके
काम क्रोध सदा भीत्तर इनके
बन बैठे चण्डाल, कैसी चली दुरंगी चाल

ये भौगी बनकर बैठे योगी
इश्क नशे के पीड़ित रोगी
नित नये भेष बदलके ढोंगी
हो गये मालामाल, कैसी चली दुरगी चाल

सत सनातन सही सतसंगा
मात-पित के चरणों गंगा
लावो डुबकी मन करो चंगा
फल मिलज्या तत्तकाल, कैसी चली दुरंगी चाल

चढणे वाल़े चढ्या करैं

जलणे वाल़े जल़ते रहते
चलणे वाल़े चलते रहते
ढलणे वाल़े ढल़ते रहते
चढणे वाल़े चढया करैं

अग्रपूजा के अन्दर एक
जल़खोरा आया था चाल
नहीं ओर था वो कोई खुद
किरसन की भूवा का लाल
शिशुपाल था वो शैतानी
कुराफात वहाँ बोल्ली बाणी
अपणी इज़्जत चाही बढाणी
न्यूं के इज़्जत बढया करै
चढणे वाल़े चढया करै

मात-पिता गुरु विप्र का
अपमान करै जो निभाग
संयन्तक मणिका झूठा
किरसन कै लगाया दाग
नाग इसा सिर फुफावै
निर्दोसी कै दोष लगावै
राही छोड़ कुराही जावै
वो के आगै कढया करै
चढणे वाल़े चढया करै

भाइयाँ सेत्ती दुर्योधन नै
सदा करी इर्षा भारी
सोने कै ना लागै काई

न्यूं कहती दुनियाँ सारी
यारी मैं धोखा करणियाँ की
झूठी गवाही भरणियाँ की
बुरी नज़र धरणियाँ की
ढपली सी मंढया करै
चढणे वाल़े चढया करै

देख तरक्की ओरां की जो
माणस मन म्ह जल़या करै
आपै अपणै आप खतम हो
नहीं कदे वो फल़या करै
गल़या करै बरफ की ढाल़ा
जैसे हो मकड़ी का जाल़ा
'फूल' पुत्र लिसान आल़ा
झूठ साच नै पढया करै
चढणे वाल़े चढया करै

इज्जत का कमाणा

इज्जत का कमाणा बंदे खुदकै हाथ सै
करिये और करवाइयें सिधी सी बात सै

औरां नै दुख देकै, के धरया कुटीच मैं
कहैकै आप कहाले भूंडी बाण गलीच मैं
पगड़ी की इज़्जत हुया करै सभा बीच मैं
घर बारी के चारों पल्ले रहें कीच बीच मैं
ज्ञान मिलैना रींछ मैं नाचै साबत रात सै
करिये और करवाइयें सिधी सी बात सै

औरां के पांया म्हातै खैचणा छड़ा छोड़ दे
पासंग मैं डाण्डी मा रै करणा धड़ा छोड़ दे
श्रद्धा भाव नहीं जहा पूजणा थड़ा छोड़ दे
पी प्याहू का पाणी फोड़णा घड़ा छोड़ दे
बणना बड़ा छोड़ दे जित बैठी हो पंच्यात सै
करिये और करवाइयें सिधी सी बात सै

बात बणाये बणतीना वहां होता खोट विचारों मैं
मनका मैल धुल सकता ना गंगा जी की धारों मैं
खुदका सोना खोटा हो फेर काढै दोष सुनारों मैं
मोका देख पासा पलटज्या मान मिलैना प्यारों मैं
जो बणै हजारी हजारों मैं वो करता घातसै
करिये और करवाइयें सिधी सी बात सै

एक दूज्जे का दरद जाणकै बोल बोलिये
भरी सभा म्ह कहणतै पहला सौबै तोलियें

सबकै साहमी अपणो का मत भेद खोलिये
मान बडाई मिलै मुफ्त मैं मिठास घोलिये
दलबीर सभानै मौहलिये साथ सारदे मातसै
करिये और करवाइयें सिधी सी बात सै

लंगड़ा हुआ समाज सुणो

खान पान पहरान छूटग्या लंगड़ा हुआ समाज सुणो
रिश्ते झीरम झीर हुये गई सरम और लिहाज सुणो

फास्ट फूडका असर कसूता बणगी तोंद तम्बूरा
इडली ढोसा बरगर समोसा छोल्ला और भटूरा
सुलफा गांझा, विश्की बीयर, पीत्ते भांग धतूरा
दूध दही ना, खीर चूरमा, ना दिखै घी और बूरा
गात सूक हुआ बेनूरा किसी पड़णे लागी गाज सुणो
रिश्ते झीरम झीर हुये गई सरम और लिहाज सुणो

केश भेष नै शान देश की लोगों कती बिगाडी
छोहरी कंवारी ढाठा मारै ब्याही शीश उघाड़ी
पीठ दिखाऊ फैशन होग्या माछरदानी की साड़ी
घूंघट गात्ती पल्ला छुटग्या नित नई रीत लिकाड़ी
गोड्या परतै पैंट पाड़कै करते फैशन आज सुणो
रिश्ते झीरम झीर हुये गई सरम और लिहाज सुणो

पिता श्री हुया डैड कती ईब मम्मी मोम कहावैसै
भाईसहाब कहै सगे जेठ नै नई बहोड़िया आवैसै
चाचा-ताऊ मामा-फूफा सब अंकल बण जावैसै
वृद्धाश्रम मैं भेज कै बुड्ढां कुछ मॉडरन कहलावैसै
मझधार बीच मैं रिश्तोंका डूबण लाग्या जहाजसुणो
रिश्ते झीरम झीर हुये गई सरम और लिहाज सुणो

सरमका सिलेण्डर खतम हुया न जाता भरया दुबारा
बुखार इश्क़ का इसा चढा तोड़ गया सब पारा

सबकी दुश्मन बणी टैंशन गया बैठ गात का ढारा
ब्रैन डैड वी पी नै करदिया गैस का चढया अफारा
वैध हकीम जोर लगारा हम किस का करां इलाज सुणो
रिश्ते झीरम झीर हुये गई सरम और लिहाज सुणो

म्हारी हाथ आल़ी चाक्की

कदे जिब या चाक्की चाल्या करती
म्हारे घर की कूण कूण हाल्या करती
आंका सवा मण का उप्परला पाट
अर सवा मण का तरला पाट
दोंनू पाट कती लिल्ला था
निचले पाट मैं एक किल्ला था
सबतै निचै छोटी-बड़ी कल़ बताई
ये हल़की भारी करण की चाबी बताई
दोंनू पाट आपस मैं घिस-घिस कै
नाज पड़ै गरण्ड मैं पिस-पिस कै
माँ पिढा पै बैठ चाक्की घुमाया करती
सारा कुणबा नै पीस-पीस खुवाया करती
ऊं चून मैं के थोड़ा सुवाद आया करता
हम दो की जगहां च्यार खाया करता
बेराना माँ ऊं चून मैं के करै थी
पेट भरज्या था पर नीत ना भरै थी
आज नीत भरज्या सै पर पेट ना भरता
खावां जरूर सां पर भूखा मरता
ना वा चाक्की रही ना वो दरदरा चून
मैदा बरगा चून खाकै होरे सैं बिरून
अनै घर की लिछमी जाण घरकै भित्तर धरया करते
बार तुहारपै लीप पोत पूज्या करया करते
साल छह मिहना मैं एक गुवारिया आया करता
अपणी टाकी तै अनै टक टक कर राहया करता
उंकी टक टक मैं हम नाच नाच देही तोड़या करते
गुवारिया भीत्तर हम बाहर आंगण फोड़या करते

सगाई आळे बी पहला इसनै ही लखावैं थे
जिस घर चाक्की उसनै ही सरहावैं थे
अर अपणी बेटी उसै घर ब्याहवैं थें
सारे ब्याह मैं इस्सैकी करमात थी
ब्याह हाथ ले इस्सै तै शुरुवात थी
उबटणा पीस्सण का काम याहे पूरा करै थी
नोस्सा नोस्सी नै भी याहे भूरा करै थी
चणा तै दाळ, दाळ तै बेसण याहे बणावै थी
अर जिम्मणियाँ नै बीस-बीस लाड्डू याहे खुवावै थी
या बहोत काम की चीज़ थी
माणस-माणस की अजीज़ थी
आज जिब इसनै देखूं सूं मेरा खून बळै सै
या छाँत पै पड़ी घाम मैं जळै सै
सरदी गरमी चौमासां मैं बाहर पड़ी गळगी
कदर करणिये नही रहे न्यूं रेत्ते बीच रळगी
बस या मेरी माँ की आखरी निशानी बाक्की सै
पोत्ता बोल्या दादा या के धर राखी सै
मै बोल्या मेरी माँ की हाथ आळी चाक्की सै
म्हारी हाथ आळी चाक्की सै

अपने

आज अपने बनकर लेरहे, हैं ज्यानअपनों की
भारतवासी करो सभी, पहचान अपनों की
कदर नै जानी अपनों नै अपनों की इस देश में
कुछ वही लुटेरे-लूट रहे, मुश्कान अपनों की

गैरों से बचाने की ख़ातिर, हम अपना खून बहातें हैं
सीने में दर्द हो उठता है, जब अपने आग लगाते हैं
जिस थाली में खाया जिसने आज उसी में छेद करे
धिक्कार है उन गद्दारों को, सिक्कों में बिक जाते हैं

मुट्ठी भर हैं कुछ लोग, देश को आग लगा रहे
बनादें पहाड़ राई का, फसादी दिमाग लगा रहे
सियासत का चला ख़ंजर, मंजर ही बदल डाला
करके खून फकीरों का, मजहबी दाग लगा रहे

चुनाव

जब से शहर की दिवारें, इश्तिहारों से सजने लगी हैं
देख के श्रृंगार अपना, दिवारें भी अब हसने लगी हैं

साज-सज्जा के नित नये लुभावने दृश्य देख
भोली जनता भी इनके झाँसे में फसने लगी हैं

देखना भी पसंद नही था कभी जिन आँखों को
आज वो जनता के दीदार को तरसने लगीं हैं

कदम नही टिके जिनके आजतलक इस शहर में
दफ्तर बना पार्टियाँ दिन-रात यहीं बसने लगीं हैं

करते थे जो एक सुर में बैठ गुफ्तगु बंद कमरों में
वही बोली चुनावों में फिर से तंज कसने लगीं हैं

बस्ती की अंधेरी गलियों में आज फिर उजाले हो गये
वोटर कोई भाग नै जाये शायद बत्तियाँ चसने लगीं हैं

नव संवत्सर

हर हाल आये चाल हिंदू साल बारबार
करके पुकार कहै प्रेम की बोछार हो
भूल हुई पिछली उन सबको सुधार के
लक्ष्य को प्राप्त कर जीवन में निखार हो
अच्छा कर मत डर हिम्मत की हुँकार भर
नभ की उच्चाइयों से जीत बेशुमार हो
जीवो ओर जीने दो हो अनेकता में एकता
संदेश में बधाई ये देश का उद्धार हो

मनाओ संवत्सर त्यौहार

सर्व जगत का संकट हारी, करे जो बेड़ा पार
मनाओ संवत्सर त्यौहार

पलक पाँवड़ा बिछाके धरती
नतमस्तक हो सुस्वागत करती
नये अंनका भोग लगाके
करे तेरा सत्कार, मनाओ संवत्सर त्यौहार

वृक्षो पर नई कोंपल आये
साहूकार नई बही बनाये
अंग-अंग सबका मुश्काये
नया हो रक्त संचार, मनाओ संवत्सर त्यौहार

नव दुर्गा की शुरु हो भक्ति
उपवास कराये देकर शक्ति
सबको एक ही रंग में रंगती
ऐसी चले ब्यार मनाओ, संवत्सर त्यौहार

अबके संवत बड़ा निराला़
एक बेमारी से पड़गया पाला़
लादिया सरकार नै ताला़
ना निकलो घर से बाहर, मनाओ संवत्सर त्यौहार

माँ

करुं मैं कोटि-कोटि वंदन जग जिसने बनाया है
वेद ग्रंथो पुराणो ने सदा गुण तेरा गया है
शब्द कोष भी पीछे अर्थ तेरा बताने में
तेरे इस नाम में सारा ब्रह्मांड समाया है

जग में देख लिया हमने उत्तम माँ का नाता है
ममता का ये पूर्ण कोष, सबकी जन्म दाता है
संस्कारो का एक श्रोत रही ये प्रेरणा की खान
सर्वस्व रूप है तेरा हमारी भाग्य विधाता है

लोरी दे सुलाती माँ, वो रातें याद आती हैं
कहानी जो सुनाती माँ, वो बातें याद आती हैं
उंगली थाम चलाती माँ महिमा माँकी बताती माँ
बैठाकर पास पढ़ाती माँ, जमाते याद आती हैं

माँ शब्द की महिमा, जगत में निराली है
माँ है तो हर दिन ही, मनती दिवाली है
धातृ जननी ये अम्बा, वीर प्रसू ये शक्ति
कहूं क्या और मैं ज्यादा मही उपवन ये माली है

फागण के धमाल

मन मोहनी सोहनी सूरत रोहणी म्हं दरश मुरारी के
देवकि नन्दन मैं करता वंदन बंधन काटो संसारी के
अंग-अंग शोभा के धाम नित नाम जपु गिरधारी के
मृग पंलके घुघंराली अलके कपोल गोल बनवारी के

करण कनेर, पुष्प पीले, सिर मोर पंख, मन मोहे जी
नंदलाला गल वैजन्तीमाला कहै कृष्णकाला तोहे जी
पिताम्बर धारी, अशुरारी, अधरों पे मुरली सोहे जी
गोपी, गोप ओर पशु पखेरु, मुरली की धुन टोहे जी

कृष्ण कन्हैया, बलराम के भैया, नाग नथैया आओजी
परमपवित्र सुदामा के मित्र घटभीतर ज्योत जगाओजी
ये जीवनसपना एकदिन टपना जपना नाम सिखाओजी
ना करो देर, दियो मैहर फेर, बखेर प्रेम, दिखलाओजी

गवाल, बाल, गोपाल चाल,संग करता खेल खिलारी जा
गोपनी सारी, भर पिचकारी, डारी कृष्ण मुरारी जा
नन्द की पोळी खेलैं होळी ब्रज की टोळी सारी जा
पीला लाल गुलाल डाल संग खेलै राधा प्यारी जा

धन्य मेरी सरकार

धन्य-धन्य हो नेता जी
ये धन्य मेरी सरकार
देश का कर दिया बंटाधार

गिरगिट की ज्यूं रंग अनोखा
भोली जनता को दें धोखा
होंठों पे मुश्कान रखते बगल
मै छुपा कटार देश का कर

संसद में यहा गोले फटते
जवानों के सिर यहां पे कटते
दुश्मन के घर लड्डू बटते
यहां फीका मने त्यौहार। देश का

छल से भरा चरित्र इनका
ना कोई करम पवित्र इनका
ना दुश्मन कोई मित्र इनका
मतलब का व्यवहार। देश का

दूध दही से नफ़रत करते
भूसी तूड़ी चारा ये चरते
पशु बेचारे भूखे मरते
नेता गये डकार। देश का कर

कड़ा कुशल शाशन प्रबंधन
नीयम का ना होय उलंघन
चीख उठा है अब तो जन जन
बंद हो भ्रष्टाचार। देश का कर

मजाक करुं सूं

एक गाम मैं एक आदमी
घणा गरीब था
गरीबी कै कारण
वो मौत कै करीब था
ना जीवै ना मरै
अधम बिचाळै लटकै था
कोय सांस आवै कोय जावै
कोय घेट बीच मैं अटकै था
तंग पाकै न्यूं बोल्या
भगवान इस आफत तै बचाले
तेरा गुण गांऊंगा
मनै आं दुनिया तै ठाले
गरीब की पुकार सुण
यमदूत उसकै घरां जालिया
अर उस गरीब को
सुधां खाट ठालिया
गरीब डर डर कै बोल्या
अरै ओ, अरै औ सुणिये भाई
तन्नै मेरी या खाट क्यूँ ठाई?
तेरा खोपड़ा खराब सै
यमराज का भेज्योड़ा आया
तेरी फरियाद सुणकै
यमराज नै अपणै धोरै बुलाया
इतणी सुण गरीब बोल्या
अरै मैं तो मौत तै घणा डरुं सूं
जा यमराज तै कहै दिये
मैं तो मजाक करुं सूं

रामकला

एक बै एक भोळी-भाळी
गाम की लुगाई
धणी के खाते का चैक ले
सजधज कै बैंक आई
बैंक बाबू नै चैंक कै पाछै
दस्तखत करण की बताई
पर उसकै वा बात
सयझ म्हं ना आई
बाबू बोल्या मैडम जी
आप पढी लिखी दिक्खो सौ
आं चौक कै पाछै वो नाम लिक्खो
जो धणी की चिट्ठी मैं लिक्खो सौ
बात समझ म्हं आग्यी
अर झट पट कलम चला
चैक कै पाछै लिख मारया
थारे चरणा की दासी रामकला

बुड्ढा माछर

एक बै एक माणस कै
द्यन म्हं माछर लड़ग्या
वो माणस उस माछर तै
मरण मारण नै अड़ग्या
न्यूं बोल्या औरै तनै
कती सरम ना आई
तनै क्यूं अपणा
पुरखां की नाक कटाई
थारा बुढलिया रात रात नै
लड़या करता
थारी ढाल वो द् यन म्हं
ना मरया करते
थमनै सरम तारकै धरदी
बेशर्मी की हद करदी
दिन धोली लूट खसूट
मचा राखी गुण्डागर्दी
इतणी सुण
माछर नै सरम तै
अपणी नाड़ झुकाली
हाथ जोड़ माफी मांग
सगली आफत कहै डाली
श्रीमान जी ईब मेरै पै
बुढापा छाग्या
इस्सै कारण मैं रात
की बजाय द्यन म्हं आग्या

सामाजिक अर शारीरिक दूरी(लोक डाउन में)

हाथ जोड़कै अरज हमारी एक सुणियो बात जरुरी
जन-समाज के मेल झोल मैं रखल्यो थोड़ी दूरी

आपस मैं मिल बैठकै, मत हुक्का पीणा प्याणा
दूर तै ही करो नमस्ते नहीं भूल कै हाथ मिलाणा
घरतै बाहर ढाबा, होटल मैं मतना खावो खाणा
झोड़ तला और स्विमिंग पुलमैं नही कदेभी नहाणा
योहे पक्का नियम निभाणा, थारी आशा होज्या पूरी
जन-समाज के मेल झोल मैं रखल्यो थाड़ा दूरी

गोद भराई, छुछक, के भी तुम सारा नाका काटो
आण काण मुहँ काण जाण तै साफ-साफ तुम नाटो
तीज त्योहारी आवै घर म्हं उसको भी मत बाटो
दूरी बणाकै बैठो सफर मैं, हो कार जीप चाहे आटो
मिल एक दूजे नै डाटो, बस कुछ दिन की मजबूरी
जन-समाज के मेल झोल मैं रखल्यो थोड़ी दूरी

ब्याह, शादी, मै नोता देकै मत न्योतारी बढाओ
कूवा, छठी, लगन, जनम पै मत डी जे बजवाओ
सांग, सलिमा, सरकस देखण, भूल कै मत जाओ
जिमके अन्दर कसरत करणा कुछदिन रोकलगाओ
तास खेलणा छुड़वाओ, फेर बरसै रस अंगूरी
जन-समाज के मेल झोल मैं रखल्यो थोड़ी दूरी

घर तै बाहर लिकड़ते ही, दूरी का ध्यान करो
मुहँ पै लगा मास्क जरुरी ज़िंदगी का मान करो

बाहर से घर अन्दर घुसते, पहले असनान करो
मंदिर मस्जिद गुरुद्वारों मैं, मत गुणगान करो
जारी ये फरमान करो, सरकार तै मिली मंजूरी
जन-समाज के मेल झोल मैं रखल्यो थाड़ी दूरी

पूला़ की छांद हमारी

जाड़् डा हो चाहे खरसा, बरसा बरसै सिद्धी धारी
हर मौसम म्हं, खरी रही , पूला़ की छांद हमारी

गाम की फिरणी पै बणी या
बैरक की ज्यूं लाग्या करती
आणियां-जाणियां कीतो
देख देख भूख भाग्या करती
रात बासा करण का ना
किस्सै तै टैक्स मांग्या करती
राहगीर की सुण बांता नै
पूरी-पूरी रात जाग्या करती
या सबका ख़्याल राख्या करती, करकै चौकिदारी
हर मौसम म्हं खरी रही पूला़ की छांद हमारी

छांद का धणी छांद म्हं
बरताऊ चीज़ धरया करता
चालता राहगीर इसमैं डटकै
दोघड़ी आराम करया करता
पिढीका पिलंग कमरीदार मुड्ढा
हारयोड़ा की हार हरया करता
शीला़ पाणी का पी कै लोट्टा
हारी तै होक्का भरया करता
पहण्डा म्हं पाणी ठिरया करता, कूणे म्हं शिलगती हारी
हर मौसम म्हं खरी रही पूला़ की छांद हमारी

या खरसां म्हं कती शीली़
जाड्डा म्हं निवाई रहै थी
एक बै घाल्या पाच्छै इसतै

दस साल निसताई रहै थी
दो हाथ चौड़ी असार की
धूलि़या ईट्यां की चिणाई रहैथी
दोनू ओड़ा कै ऊप्पर जाकै
चाँदा की कटमा कटाई रहै थी
चाँदा ऊप्पर मोटा बले़रवा, एक सहंतीर बीच म्हं भाहरी
हर मौसम म्हं खरी रही, पूला़ की छांद हमारी

म्हारे बुढ़लिया की या ए. सी.
बड़ी काम आया करै थी
बिना बिजल़ी कै ही गरीब का
बढिया काम चलाया करै थी
भाईचारा, एकता अर प्रेम का
सबनै पाठ पढाया करै थी
छल कपट को दूर भगाकै
सबनै खूब हँसाया करै थी
रोट्टी राबड़ी खुवाया करै थी, करी चोखी खिदमदगारी
हर मौसम म्हं खरी रही पूला़ की छांद हमारी

कड़वा फल बुढापा का

हँसने ओर हँसाने का, सदा मैं काम करता हूँ
हँसाकर ही बुजुर्गों का, मै रोशन नाम करता हूँ
पता भी नही चले, खतम कब खेल, होजाये
इसी खेल में सबको, मैं प्रणाम करता हूँ

उड़े जिब होली के ये, रंग धरा अम्बर भी महकाये
चरा-चर के, सभी प्राणी मस्ती में हो मस्ताये
मिटाकर नफ़रत की आंधी करें सब प्यारकी वर्षा
जवाँ हो जाते सब बूढे मिलन जब होली का आये

करवा चौथ जब आये, आती याद मुझे उसकी
वर्षो से मनाता हूँ, इसदिन पुण्यतिथि जिसकी
उसी की याद में रखता उत्सव एक बड़ा भारी
करो सम्मान पत्नीका छोड़ देशी ओर विसकी

बुढापा छा गया हमको जवानी याद आती है
बही थी प्रेम की गंगा रवानी याद आती है
दमकता था मेरा चेहरा झुरियाँ पड़गई अबतो
दिवाने थे कभी हम भी दिवानी याद आती है

वो यादें जब जवानी की, सतातीं हैं बुढ़ापे में
पागल दिल मचलजाता नही रहता ये आपेमें
वोही आकर, जरा देखे, मेरे पहलू में दोबारा
छुपालुंगा उसे दिल के, खाली लिफाफे में

बनो हिंदी भाषी

सुनो सब भारत वासी, बनो हिंदी भाषी
हिंदी है मस्तक की बिंदी प्रज्ञामय प्रकासी

देवनागरी लिपि बताई
संस्कृत तेरी जननी माई
गुणगान करै तेरा मथुरा काशी
सुनो सब भारत वासी बनो हिंदी भाषी

जिसने भी तुझको अपनाया
उन सबका तूने ज्ञान बढाया
गृहस्थी हो चाहे वो सन्यासी
सुनो सब भारत वासी बनो हिंदी भाषी

शशी भान जैसा चमकारा
जीवन में कर गई उजियारा
बन के गगन में पूर्णमासी
सुनो सब भारत वासी बनो हिंदी भाषी

आन बान बनी शान देश की
ये हिंदी है पहचान देश की
आगे बढाओ मिलके सब अभिलाषी
सुनो सब भारत वासी बनो हिंदी भाषी

जूत्ते बणा नैक टाई

दुकान खुलते ही
एक ग्राहक भाई
लगा खरीदणे नैक टाई
रंग रंगीली नीली-पीली
टाई देखी अनेक
कई देर बाद
पंसद आई एक
न्यूं बोल्या रै भाई
तू इसका दाम बोल
इसके दो हजार रपैया
एक ही मोल
दुकान दार की बात
भाई कै पची नही
अर वा टाई उसकै
जची नही
मैहगाई नै हद करदी
कित जाग्यी या निगोड़ी
इतना रपैया मैं तो
आज्यां जूत्ते कई जोड़ी
दुकानदार बिरचग्या
करकै आँख लाल
हाथ पकड़ उसतै बोल्या
तू अड़ै तै चाल
अर उन जूत्यां नै ही
गल़ म्हं घाल लिये
बोहणी बट्टे का टेम सै

अपणी राह चाल लिये
घणी मतना तारा सफाई
अपणे जूत्यां नै ही
बणालिये नैक टाई

सारे सीखो मातृभाषा

चसै ज्ञान की जिससे ज्योती
दुनिया कहती उसको पोथी
खूब पढो ओर सबको पढाओ
मनके मैल सदा ये धोत्ती

इस बिन सारा जीवन सूना
देखा फिर फिर हमने कूना
कमी खलेगी एक दिन ऐसे
जैसे नमक बिन साग अलूना

यह जीवन की सच्ची साथी
झूठें हैं सब गोत्ती नात्ती
तमसे भरे जीवन को उज्ज्वल
करती है बन दीवा बात्ती

सबसे बस एक यही है आशा
कोई रहे ना इससे प्यासा
इस बिन ना कोई जग में चारा
तुम सीखो पहले मातृभाषा

लाज खून की राखिये

माँ हे, हे माँ, हे मैं जारहया सूं
खून दान करकै आरहया सूं
माँ कै काल जै शान्ति आई
अर अपणे बेटे और लखाई
वाह रे वाह मेरे लाल
बोल्ली मन्नै बी साथ ले चाल
यो बडा पुन का काम सै
रक्तदान्नी का जग मैं नाम सै
जो लहू का दान करग्या
वो भव तै पार उतरग्या
तेरी सौच सोला आन्ना सही सै
इसमैं कती मीन मेख नही सै
अर किसै नै ठीक ही कही सै
किसै नै जीवन दान मिलज्यागा
कोय मुरझाता फूल खिलज्यागा
इस खून के अनेक रंग बताये
कितै गमी कितै खुशी जताये
कोय खून तै करके लिखाई
नित चलता चाल कुराही
अस्मत हुई जहाँ तार-तार
तब-तब खून हुआ सरमसार
कोय करे खून से गद्दारी
कोई चुकाता कीमत भारी
एक खून को खूब लजावै सै
एक खून की लाज बचावै सै

दारु की बोत्तल

एक बोला बच्चा बाप से
मेरी शिकायत आप से
रोज शाम घर आते हो
झगड़ा कर सो जाते हो

बोले जब बी कोई तुमसे
झगड़ा करते उन सबसे
बिजली पानी बिल गैस का
खरचा कैसे चले मैस का

मैया मेरी बस हरदम रोती
हमें खिला खुद भूखी सोती
घर का कैसे चले गुजारा
पीकर आता बाप तुम्हारा

माँ हमसे कुछ बी बोले ना
कदे घर का राज खोले ना
जितणी जरूरत होती म्हारी
चुपके चुपके माँ करती सारी

पीकर दारु घर को आते
सबके संग फिर उधम मचाते
सदा झगड़ा करते रात में
खुशी देते तुम प्रभात में

मानो अब तो पिता हमारी
कहती अब संतान तुम्हारी
पीणी पिलाणी छोड़ दियो
दारु की बोत्तल फोड़ दियो

सलूणी राखी का त्यौहार

यो भाई बहाण का प्यार, दुनिया म्हं अमर रहैगा

थाली सजाकै बहना ल्यावै
राखी बांध मिठाई खिलावै
आशीष दे बारम्बार, दुनिया म्हं अमर रहैगा
यो भाई बहाण का प्यार, दुनिया म्हं अमर रहैगा

रक्षा का यो बंधन प्यारा
मस्तक लागै चंदन प्यारा
फेर धन की हो बोछार, दुनिया म्हं अमर रहैगा
यो भाई बहाण का प्यार, दुनिया म्हं अमर रहैगा

आवै सलूणी याद जिब आई
बिना बहाण कै सुन्नी कलाई
यो बहनो का त्यौहार, दुनिया म्हं अमर रहैगा
यो भाई बहाण का प्यार, दुनिया म्हं अमर रहैगा

आवैं जावैं तीज त्योहारी
सबकै मौज करै बनवारी
दलबीर खिलै गुलजार, दुनिया म्हं अमर रहैगा
यो भाई बहाण का प्यार, दुनिया म्हं अमर रहैगा

महंगाई

आटा खतम पिप्पे का
हुआ सिलेण्डर बन्द
महंगाई की आग में
झुलसा ताराचन्द
झुलसा ताराचन्द
चिंत्या चित नै चाटै
बिजली पानी फोन
गैस का बिल ना पाटै
कहै दलबीर 'फूल'
उठग्या ईब खखाटा
जीणा हुआ दुशवार
खतम पिप्पे का आटा

भंयकर रूप धर चढी महंगाई सर

दीन हीन मांग रहे, कर्जा साहूकार से
बिजली पानी फोन का, लिया बैंक से लोन का
बच्चों का स्कूल खर्च भी, चले ना पगार से
बी पी एल में नाम है, ना होता कोई काम है
पैन नम्बर खाते के, लिंक है आधार से
धन आया तकदीर का, छंद दलबीर का
राम गोड गुरु पीर का, लेख मिला प्यार का

अभिमान

इंसान कदे अभिमान करै मत, यासै नरक निशानी।
रावण नै किया अभिमान उंकी सुणल्लो अजब कहानी।।

दिगविजय का जिक्र सुणाऊ, होग्या मोटा चाला
देवतावों को दे-दे गाली, युद्ध म्हं हुआ मतवाला
उसी जगह एक बुढिया तै, रावण का पड़ग्या पाला
पैर पकड़ उस बुढिया नै, वो अम्बर म्हं उछाला
हुआ ज्यान का कुढाला, पर छोड़डी ना शैतानी
रावण नै किया अभिमान उंकी सुणल्लो अजब कहानी

पाताल लोक की कथा सुणाऊ बली से बैर बढाया
राजा बली नै पितामह का, उसको कवच दिखाया
कवच उठाकर दिखलाओ तुम, बलिनै यूं फरमाया
उठया कोन्या कवच रावणतै, धोखा धर पछताया
बली नै यूं समझाया भाई, या कांया आणी जाणी
रावण नै किया अभिमान उंकी सुणल्लो अजब कहानी

बाली का बल अजमावण वो पंपापुर जा पोहच्या
बालीका दिया ध्यान डिगा न्यूं उलटा मनमै सोच्या
क्रोधित होकै बाली नै वो काँख तलै दबोच्या
छह महिनेतक रहया लटकता मन रावणका मोच्या
फेर एक दिन काँख मैं नोच्या न्यूं चाही ज्यान बचाणी
रावण नै किया अभिमान उंकी सुणल्लो अजब कहानी

ऋषि मुनियो का लेकै लहू वो बणग्या अत्याचारी
उसी लहू से मिथला के म्हं हुई पैदा जनक दुलारी
सीत्ता नाम धरया नारद नै हुई रामचंद्र की प्यारी
भेष बदल उस रावण नै वो, हरली थी परनारी
कहै दलबीर जाणै दुनिया सारी खतम हुआ अभिमानी
रावण नै किया अभिमान उंकी सुणल्लो अजब कहानी

एक याद पुराणी आई कहाणी

जून उन्नीस सो पिचहतर ते इक्कीस जून सतहतर सालका
सुणो न्यारा-न्यारा जिकर सुणाऊं मैं पूरे आपात काल का

उन्नीस सौ पिचहतर का दिन तारिख पच्चीस जून थी
उमड़-घुमड़ कै बादल़ चाल्ले, चाल्ली परवा पून थी
हाल़ी हल़ नै लेकै चाल्या, जणू आग्यी मानसून थी
जितनी आस लगा राखी, वो तो सारी हुई बिरुन थी
पड़या टूटकै कहर म्हारे पै, उस जग के दीन दयाल का
सुणो न्यारा-न्यारा जिकर सुणाऊं मैं पूरे आपात काल का

मुसल़ाधार पड़ी बारिस, पड़े साथ म्है मोटे ओ़ले़
खड़ी फ़सल हुई रापट रोल, ना दिखैं डाण्ड अर डोले़
कालर कोरै लुटग्ये सारे, किसान म्हारे दिन धोले़
नही किस्सै नै सुणी म्हारी, हम रहग्ये साद् दे भोले़
ओला दिन म्हारा लाग गया, मैं जिकर करुं उस हाल का
सुणो न्यारा न्यारा जिकर सुणाऊं मैं पूरे आपात काल का

कच्चे ढूण्ड ढहग्ये म्हारे, जो थे महल हमारे
छांद, झोपडी, ढारे, उसारे, महारे टपकण सारे
चुल्हा इधण चोसड़ होग्या, मरै टाबर भूखे म्हारे
गाय, भैंस, ऊँट अर बकरी, खड़े चोडे के म्हा नाहरे
दिखण लागे दिन म्है तारे, ना मिल्या मुआवजा माल़ का
सुणो न्यारा-न्यारा जिकर सुणाऊं मैं पूरे आपात काल का

बोल तोल अनमोल कहूं सुणियो न्यारा न्यारा जी
नही रहणनै ठोड़ मिली ना छुटग्या घर हमारा जी

मंदरअर धर्मसाल़ा अन्दर करणा पड़या गुजाराजी
जेठ का यो महिना आवै बणकै बैरी म्हाराजी

दर दरकी ठोकर खाण लगे बण्या भेष भिखारी का
दूर दूर तक बू फैलग्यी डर होग्या खास बिमारी का
छोट्टे छोट्टे बाल़क रोवैं चहूं ओर शौर किलकारी का
डांगरा की बेल झाड़दी धरकै ध्यान मुरारी का

करके ना विशवाश खास हम ला बैठे सरकार तै
सरकारी मुलाजिम आकै, समझावैं थे प्यार तै
हम रोट्टी कपड़ा भेंज्यागें, जा सरकारी भण्डार तै
अधम बिचाल़ै डोब्बी नैया ना पार करी मजधार तै

उमर मेरी जिब छोटी थी पर इब भी सारा ध्यान सै
सरस्वती की कृपा तै मनै काव्य करण का ज्ञान सै
हरियाणा रेवाड़ी जिले म्हं गाम मेरा लिसान सै
खता माफ फरमाणा मेरी दलबीर 'फूल' नादान सै

चहूं ओर पुर जोर सोर तै कहर करया उस नीर नै
माणस माणस डोलै रोंवता किसा खेल रचया तकदीर नै
जिसकै लागै वोहे जाणै, कोण जाणै पराई पीर नै
पिचहतर तै सतहतर तक लिख्या हाल मेरे ज़मीर नै
यो भजन कथ्या दलबीर नै, नई तरज नये खयाल का
सुणो न्यारा-न्यारा जिकर सुणाऊं मैं पूरे आपात काल का

भोले़ की बारात

परम पवित्र, अति विचित्र श्री शिव जी की बारात
बण ठण चाले भोले़ नाथ

रुद्रदेव की बहना चण्डी मनम्हं खुशी मनावै थी
संखणी अर डंकणी मिलकै बंदड़ा गावै थी
सरपों के आभूषण तै भोले़ को सही सजावैं थी
तेल बान सब पूरे करकै शिव को बैल चढावैं थी
बतलावै़ थी सरहावैं थी वो देवों की पंच्यात
बण ठण चाले भोले़ नाथ

गणों के सरदार सारे ले गणों को संग चले
नागों की सब पहन के माला़ रमा बभूती अंग चले
कोय बाघम्बर खाल लपेटे, कोय उघाड़ा नंग चले
ढफ-ढोलक, बीन-बाँसरी, कोय बजा मृदंग चले
बेढंग चले भर उमंग चले ले त्रिपुरारी को साथ
बण ठण चाले भोले़ नाथ

भूत-प्रेत, यक्षों की, वहां लाम्बी एक, कतार फिरै
कांया म्हे कोय मल़ कै खून करता हा-हा कार फिरै
धड़ कै ऊप्पर नहीं शीश, इसे बराती हज़ार फिरै
कुक्कर-सुक्कर का भेष बणा मस्ती मैं नचार फिरै
कर श्रृगांर फिरैं, रिश्तेदार फिरैं, करै फूलों की बरसात
बण ठण चाले भोले़ नाथ

कहै दलबीर इन्द्र देव भी एरावत गज पर चाल आये
विष्णु जी गरुड़ आरूड, होकर के तत्तकाल आये
पिता मह ब्रहमा जी भी करके भेष विशाल आये
देव मण्डली गंधर्व किन्नर ले सारे सुर ताल आये
गायें बजायें, धूम मचायें, शिव भोले़ की जमात
बण ठण चाले भोले़ नाथ

तिरंगा ऊंचा रहे हमारा

शहीदों की बणी समाधी पे, श्रद्धा से सुमन चढायेगें
भारत के वीर शहीदों को, हम चरणां शीश झुकायेगें

आजादी की खात्यर चाल्ले ज्यान घालकै झोली मैं
सब धरमों के कट्ठे हो गये कुद् खुन्नी की होली मैं
संस्कारों की झाल उठै थी उनकी सूरत भोली मैं
इंकलाब जिंदाबाद का नारा गूंजा उनकी टोली मैं
महारे हिरदय बीच बिचोली मैं हम भूलैं नही भुलायें
भारत के वीर शहीदों को हम चरणों शीश झुकायेगें

देश की खात्यर वीर बहोतसे अपणी ज्यानपै खेलगये
नादान उमर मैं अंग्रेजों की, वो कड़ी यातना झेल गये
खुल्ले खाण के दिन जिनके, वो तो सारे जेल गये
अंग्रेजों की रणनीति को, वो करके सारे फेल गये
दुश्मन कै घाल नकेल गये गाथा उनकी दोहरायेगें
भारत के वीर शहीदों को हम चरणों शीश झुकाययेगें

माँ के बेट्र टे बहनो के भाई सुहागणों के सुहाग गये
भारत माँ के बंद्ध छुड़ाणे तन-मन-धन तै लाग गये
अब नहीं सहेंगें और यातना वीर देश के जाग गये
बुलंद होंसले देख वीरों के दुश्मन यहाँ से भाग गये
कर देश की ऊंच्ची पाग गये उन वीरों के गुण गायेगें
भारत के वीर शहीदों को हम चरणों शीश झुकायेगें

तिरंगा ऊंचा रहे हमारा भारत की संतान कहै
लहर-लहर लहरावै गगन मैं वीरों का बलिदान कहै
शहीदी दिवस मनावो सारे, देश का हर जवान कहै
थारी चिता पै लागै मेला दलबीर गाम लिसान कहै
यो सारा हिन्दुस्तान कहै झुक-झुक आभार जतायेगें
भारत के वीर शहीदों हम चरणों शीश झुकायेगें

बेट्टी को बचाणा सै

बेट्टी को बचावण खात्यर इब सबनै आगै आणा सै
बेट्टी बचाओ नारा प्यारा, हर घर मैं पोहचाणा सै

जनमतै पहल्या मरैगी बेट्टी थम सृष्टि कैसे बढाओगे
ना समझी मैं करकै गलती, धोखा धर पछताओगे
मझधार बीच मैं डुब्बै नैया कैसे पार लगाओगे
बेट्टी नही बचाओगे तो, बहू कहाँ से ल्याओगे
क्यूकर वंश चलाओगे, हर नर को यूं समझाणा सै
बेट्टी बचाओ नारा प्यारा हर घर मैं पोहचाणा सै

शक्ति लक्ष्मी सिता सावित्रि ये सरस्वती अवतारीं सै
कल्पना और संतोष सुनिता नै जाणै दुनिया सारीं सै
सेना मैं इब भरती हो दुश्मन का छक्का छुटारहीं सै
धरती की तो बात कहूं के आकाश मैं जहाज उडारहीं सै
या भ्रूण पै चली कटारी सै, अब इसको बन्द कराणा सै
बेट्टी बचाओ नारा प्यारा, हर घर मैं पोहचाणा सै

कुराही पै जाण तै पहल्या इस मन पापी नै मारलियो
बेट्टी बचाओ तो देश बचौगा या मन मैं पक्की धारलियो
डूबती इस देश की नैया तुम भव से पार तारलियो
बेट्टे अर बेट्टी मैं फरक ना कर एसे शुद्ध विचारलियो
बेट्टी तै कर सब प्यार लियो, बस योहे लक्ष्य पाणा सै
बेट्टी बचाओ नारा प्यारा, हर घर मैं पोहचाणा सै

चढती बेल काटणियों का हो, नरक कुण्ड मैं वाश सुणो
भरी थाली़ कै ठोक्कर मार जो करै आगै की आस सुणो

ऐसे कुकरम करणियों का हो जड़ा मूल़ तै नास सुणो
बेट्टी बचाओ बेट्टी पढाओ, दलबीर करै अरदास सुणो
हो चहूं और प्रकाश सुणो, रोशनी का दीप जलाणा सै
बेट्टी बचाओ नारा प्यारा, हर घर मैं पोहचाणा सै

आप बित्ती

धरमां करमां की करडा ई
जगहां जगहां हम घूम लिए तेरै लागी नही दवाई

पाटोधा ओर कोसल़ी गये हम नारनौल
पैरांतल़ा धरती निकल़ी रोहतक मैं सुणे बोल
असाध्य रोग बताया जिसका नही कोय मोल
घासेड़ा मैं रामदेव तै जाके करलिया हमनै मेल
पाटोदी मैं बब्बरशाह कै खूब चढाया हमनै तेल
बिकानेर को चल दिये कनीणा तै पकड़ रेल
गहण कर ओर जयपुर भी मैं लेग्या अपणा भाई
जगहां-जगहां हम घूम लिए तेरै लागी नही दवाई
धरमां करमां की करड़ाई

खैराणा सेहल़ंगा अर जीतपुरा मैं लाया झाड़ा
महेंद्रगढ गुड़गामा दिल्ली खूब लगाया हमनै भाड़ा
हट्टा-कट्टा, लाम्बा-तगड़ा नहीं कामका थावो माड़ा
मारकपुर, भैरुपुर, और नीरपुर मैं गये नाट
रेवाड़ी मैं डाकटरों नै पैर दिया था उसका काट
भाई मेरेनै पकड़ लई, उस्सै दिनतै अपणी खाट
हरिद्वार और निलकण्ठ की, करली खूब चढाई
जगहां-जगहां हम घूम लिए तेरै लागी नही दवाई
धरमां करमां की करड़ाई

बुझा खात्यर चल दिये सैय, जेरपुर, निमराणा
रामनगर अर गुजरघाटा मै भी होग्या म्हारा जाणा
झोरड़ा ओर देवहता म्हं किसी नै बताया स्याणा

फरीदाबाद तै लीदवाई ओमप्रकाश का होग्याआणा
अटेली म्हं एक्यूपंक्चर का वैद्य बताया एक पुराणा
भोजावास गोमला का खा गया था अपणा दाणा
जंडाला़, अबोहर, भ्याणी ना सिरसा हुई सुणाई
जगहां-जगहां हम घूम लिए तेरै लागी नहीं दवाई
धरमां करमां की करड़ाई

श्रद्धा भाव लेकर हम, बगड़धाम को गये चाल
भगवानपुरा, झाड़ोदा, छव्वा, झज्जर, जुड्डी झाल
गोठड़ा अर मोतला मैं जाबासर का हुआ ख्याल
भाला़ के म्हां श्रीराम की धजा चढादी हमनै लाल
बाबा ईस्सरपुरी महाराज का बोलदिया था हमनै टाल
खण्डोड़ा ओर बहरोड़ मैं, गली़ नहीं म्हारी दाल़
दुरलभ जी मैं बतादिया, क्यूं व्यर्था करै लुटाई
जगहां-जगहां हम घूम लिए तेरै लागी नहीं दवाई
धरमां करमां की करड़ाई

अठाईस जनवरी नो की साल बणकै आई एक तुफान
सैंतीस साल की उमर अंदर चला गया भाई जवान
धोखा धर पछताता रहग्या मेरा पूरा गाम लिसान
अंत घड़ी जिब तेरी, आई टूटी सांसो की जंजीर
व्याकुल हो लग्या पुकारण जल्दी आज्या भाई दलबीर
श्री राम की जय बोल पंच तत्व म्हं करग्या शीर
आणा जाणा इस जग की एक सच्ची रीत बताई
जगहां-जगहां हम घूम लिए तेरै लागी नहीं दवाई
धरमां करमां की करड़ाई

कहूं गाथा अंजनी लाल की

उस जनम जति हनुमान वीर की गाथा गाऊं मैं
अवतार धार आये दुनिया मैं उनकी कथा सुणाऊं मैं

बड़ी अनोखी बात है चौखी लेख मिल्या एक प्यारा
जरब जमा का हिसाब लगा वर्ष बतादयूं सारा
एक करोड़ पिचासी लाख अठावन हजार एकसोबारा
इतनी साल पहले जनम्या अंजनी माँ का दुलारा
ग्रन्थों का प्रमाण बतारा, वाहे बात दोहराऊं मैं
अवतार धार आये दुनिया मैं उनकी कथा सुणाऊं मैं

राम चरित मानस क्षेपक की, गाथा यूं बतलाती
कश्यप रिषि के आश्रम एक आया उदण्ड हाथी
हाथी भगाकै केशरी नै, रिषियों की बचाई थाती
पवन समान तेरै बेटा होगा आशीष मिल्या करामाती
चैत शुदि पूर्णिमा की आती, जनम लिख्या दर्शाऊं मैं
अवतार धार आये दुनिया मैं, उनकी कथा सुणाऊं मैं

उत्सव सिन्धु का लेख बताऊं सुणो लगाकै ध्यान
कात्यक बदी चोदस का एक पढ्या मनै व्याख्यान
स्वाती नक्षत्र सोमवार वो, मेष लगन था महान
कुछ न्यारे-न्यारे लेख देख न्यूं भगत हुये परेशान
कृष्ण पक्ष मैं जनम्या हनुमान सारी खोल सुणाऊं मैं
अवतार धार आये दुनिया मैं उनकी कथा सुणाऊं मैं

बच्चपन की लीला देख पाट्या एक चाला जी
सूर्यदेव को पकड़ण चाले देखो बजरंग बाला जी

इन्द्रदेव नै देख कै ठालिया वज्र निराला जी
मारकेना वज्र सोच्या कामकरया घणा काला जी

अपणी रक्षा देखकै खुश हो गया था भान जी
गगन मण्डल तै आण पड़या, धरती पै आन जी
टूट गई टोढी बस उनकी बच गई ज्यान जी
उसी दिन से नाम पड़गाया उनका हनुमान जी

लंका अंदर उस दशकंदर का कीया बुरा हाल जी
ब्रह्म फास मैं फसगये कर ब्राह्मजी का ख्याल जी
विभीषण फेर आके बोल्ये करो दूत को भाल जी
सबतै प्यारी पूंछ इसकी, दियो इसी को जाल जी

कपड़े तेल मेल से फेर आग जो लगाई थी
मार-मार थप्पड़ फेर डाढी मूंछ भुजाई थी
कूद-कूद कै हनुमत नै लंका वा जल़ाई थी
राम भगत विभीषण की झोंपड़ी बचाई थी

सीताजी की शुद्ध लेके चढे अरिष्ट पर्वत बलधारी
पहाड़ जैसी मार धाड़ कै करी गरजना भारी
डरकै कारण भागण लागे लंका के नर नारी
घरकै भित्तर बड़गये सारे मार मारकै किलकारी

स्त्रियों के गरभ गिरग्ये तितर बितर होग्ये बादल
दिशायें भी काँपण लाग्यी समुद्र का उठग्या जल
दशानंन भी लुड़क गये हालण लाग्या सारा थल

लंका का हाल सुणो हो रही मारा मारी जी
चारों और धधक रही महल और अटारी जी

करामात देख खुशी छाई जनक दुलारी जी
शंकर के अवतारी थारी लीला अती भारी जी
घरघर मैं ज्योतजलती महिमा अति प्यारी जी
दलबीर भी दास थारा आग्या शरण थारी जी

कहै दलबीर प्रमाण भतेरे जिन खोजा तिन पाया
मुझको जितना बेरा था वो कविता मैं दरशाया
सही गलत की तुम जाणो हाल पढ्या वो सुणाया
खता माफ फरमाणा मेरी थारे चरणो शीश झुकाया
अदभुत जो बलधाम बताया, मेहर उनही की चाहूं मैं
अवतार धार आये दुनिया मैं उनकी कथा सुणाऊं मैं

तूं करले हरि तै प्यार

तेरा होज्यागा बेड़ा पार
तूं करले हरि तै प्यार

मीरां नै ऐत बार किया था
मोह ममता तज जहर पिया था
वा खरग्यी हरि का दीदार
तूं करले हरि तै प्यार

नरशी नै विश्वास किया था
माया लुटा हरका ध्यान धरया था
बणया भात्ती कृष्ण मुरार
तूं करले हरि तै प्यार

एक दूज्जे का छोड़कै रोल़ा
इस मन पापी कै लाकै डोल़ा
करकै शुद्ध विचार
तूं करले हरि तै प्यार

ईश्क हरि तै जो भी करग्या
कहै दलबीर उनका पेटा भरग्या
उन्हें याद करैं संसार
तू कर ले हरि तै प्यार

गाथा कृष्ण कनहाई की

कहूं गाथा कृष्ण कनहाई की, सुणो सभी नर नारी

उग्रसैन देवक दो भाइयों की जोड़ी प्यारी थी
देवक सुता देवकी, घर बैठी एक कवांरी थी
सूरसैन सुत वसुदेव से रिश्तेकी बात विचारी थी
रिश्ते की बात सुणकै राजी कुल की नारी थी
सूरसैन ओर देवक अंदर होगई रिश्तेदारी थी
पतड़ा देख विप्रजी नै शादी तिथि उचारी थी
बण ठण कै बाराती चाले मन मैं खुशी छार्ही थी
हाथी-घोड़े अरथ मंझोली भैल की सवारी थी
राजी होकै कंस नै फेर बहाण पाटडै तारी थी
करी त्यारी फेर विदाई की, कर कै खूब होशियारी
कहूं गाथा कृष्ण कनहाई की सुणो सभी नर नारी

बेट्टी का सिर पुचकारया आख्यां मैं भरकै पाणी
कर्म फूटग्या पासा पलटा हो गई आकाशवाणी
आठवां गरभ इसका कंस देगा तुमको हाणी
सुणे बैन हुये सुरख नैन कंस बदल्या अपणा भेष
माथेऊप्पर तोड़ी पड़गी छिड़गी जंग हुआ कलेश
देवकी के पकड़ लिये कंस नै रथ ऊप्पर केश
दुल्हा दुल्हन तार लिये भगा दई सारी बारात
हाथ हथकड़ी पायां बेड़ी डाल दिये हवालात
बहाण बहणोई कैदकर दिखादई अपणी औकात
करतूत देखकै भाई की, रोवै करमा की मारी
कहूं गाथा कृष्ण कनहाई की सुणो सभी नर नारी

देख भाई का करम सरम तै देवकी दिल टूट गया
ऐस आराम रातों की नींद, खाणा पीणा छूट गया
भरी सभा कै बीच नीच वो चौड़ै के म्हा लूट गया
फेर उग्रसैन के कहणे तै भी, कंस नै करी ना टाल़
बुद्धी भ्रष्ट हो जाती है जब आता है विनाश काल
गिदड़ की जिब आवै मौत गाँव तरफ आता चाल
दोनो जणे पड़े कैद मैं दुख-सुख की बतल़ावैं वो
लिखी करमकी रेख मिटैना न्यूं दिलनै समझावैं वो
छह संतान दई मार कंस नै इब के हमतै चाहवै वो
स्तुति करी रघुराई की जो दुष्टों का संघारी
कहूं गाथा कृष्ण कनहाई की सुणो सभी नरनारी

रोहणी नक्षत्र अंदर भादो बदी आई जी
अष्टमी बधवार रात प्रगट भये कन्हाई जी
फूलों की बरसात कर देवै नै खुशी मनाई जी
फाटक-कुवाड़ खुलग्ये सारे सौ गये पहरेदार जी
हाथ हथकड़ी बेड़ी झड़ग्यी होग्या चमत्कार जी
जमना पार गोकुल पोहच्या वो नंद के द् वार जी
लड़का देकै लड़की ल्याया उसी रात वापिस आया
हरघर अंदर खुशियाँ छाई, दुष्टों का किया सफाया
देवकी वसुदेव को झट कैद से आजाद कराया
पकड़ राह कविताई की, दलबीर सरण है थारी

हो भोले भण्डारी

शीश शशि थारै चमकै चम-चम
कर म्हं डमरु बाजै डम-डम
थारे भगत पुकारे बम-बम-बम
हो भोले भण्डारी

देवों मैं महादेव तेरा रूप है निराला
कर मै त्रिशूल सोह रुद्राक्षो की माळा
भष्म अंग बाघंबर छाला
गळ म्हं एक नाग काळा
मस्तक पै एक नैन विशाला, कहते त्रिनेत्र धारी
थारे भगत पुकारे बम-बम-बम हो भोले भण्डारी

जिब जिब संकट आये धरापै तेरा लिया सहारा
झट-पट प्रगट हो गये, जिब देवों नै पुकारा
फेर एक बाण तै मारा
तनै संकट मेट्या सारा
पड़या नाम एक प्यारा सब कहतें हैं त्रिपुरारी
थारे भगत पुकारै बम-बम-बम हो भोले भण्डारी

हा-हा कार मची जगत मैं कीया तुमने ध्यान
नील कण्ठ थारा नाम पड़या, कीया विष का पान
किया देवों नै गुण गान जी
फेर गूंज उठा असमान जी
करया भगतों का कल्याण जी हे सच्चे न्याकारी
थारे भगत पुकारे बम बम बम हो भोळे भण्डारी

थारे शिवा इस दुनिया म्ह देव नहीं कोय दूजा
दलबीर 'फूल' भी अष्ट पहर करता थारी पूजा
बस और नहीं कुछ सूझा
ले आस पड़या तेरे कूजा
मैं सुबह शाम रटना रटूजा तेरे नाम की अघारी
थारे भगत पुकारे बम-बम-बम हो भोले भण्डारी

समपन्न